केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 223 सोमवार 10 मार्च 2025 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

लाउडस्पीकर पर अजान पढ़ना महंगा पड़ा, इमाम के खिलाफ केस दर्ज

संभल (आभा)। यूपी के संभल में चंदौसी क्षेत्र में तेज आवाज में अजान होने पर पुलिस ने मस्जिद के इमाम के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। साथ ही लाउडस्पीकर को कब्जे में भी ले लिया है। इससे पहले भी संभल प्रशासन ने कई स्थानों पर लाउडस्पीकर उतरवाए थे। साथ ही अवहेलना करने पर सख्त कार्रवाई करने के आदेश भी दिए थे। इसके अलावा धार्मिक स्थलों पर तेज आवाज में लाउडस्पीकर न बजाने की भी हिदायत दी थी।

पुलिस ने रविवार को बताया कि शनिवार को चंदौसी नगर के पंजाबीयान मोहल्ले की एक मस्जिद में मानक से अधिक ऊंची आवाज में लाउडस्पीकर से अजान दिए जाने की शिकायत मिली थी। जिस पर मस्जिद के इमाम हाफिज शकील शम्सी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और ध्वनि प्रदूषण (विनियमन व नियंत्रण) नियम की सुसंगत धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया। उसने बताया कि पुलिस ने लाउडस्पीकर को जब्त कर लिया है। विधिक कार्रवाई जारी है।

जला है ट्रांसफार्मरः अंधेरे में जीने को मजबूर हैं ग्रामीण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। विक्रमजोत ब्लॉक क्षेत्र में ट्रांसफॉर्मर जलने से चार दिनों से ग्रामीण अंधेरे में रात गुजारने को मजबूर हैं। मामला गोपालपुर गांव में लगे 25 केवीए ट्रांसफॉर्मर का है। ग्रामीणों ने इसकी लिखित शिकायत पोर्टल पर की है। अभी तक समस्या जस की जस बनी है।

विवाहिता की मौत मामले में आरोपी पति गिरफ्तार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। विवाहिता के मौत के मामले में आरोपित पति को सोनहा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। प्रभारी निरीक्षक मोतीचंद राजभर ने बताया कि सोनहा थानाक्षेत्र के भीवापार निवासी प्रमिला देवी पत्नी पाटन चौहान ने करीब 11 माह पूर्व 25 अप्रैल की रात में साड़ी के फंदे से लटककर जान दे दी थी। मृतका के पिता पहलू चौहान ने आत्महत्या के लिए उकसान के आरोप में ससुरालियों पर केस दर्ज कराया था। थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपी पति पाटन चौहान को थानाक्षेत्र के बैड़ा समय माता मंदिर के मोड़ के पास से गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया गया। गिरफ्तारी करने वाली टीम में सचिंद्र कुमार, हेड कांस्टेबल संजीत श्रीवास्तव, देवेंद्र यादव शामिल रहे।

ग्रामीणों ने रोका मानक विहीन सड़क निर्माण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। साऊंघाट क्षेत्र के ग्राम पंचायत करही के राजस्व पुरवा हरैया जप्ती में पीडब्ल्यूडी की ओर से बनवाए जा रहे सड़क को ग्रामीणों ने रोक दिया। ग्रामीण यशपाल सिंह यादव को बुलवा कर काम को रूकवा दिया हैं। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि यशपाल यादव ने एई राजेश त्रिपाठी व जेई धर्मेन्द्र कुमार से वार्ता की। एई राजेश त्रिपाठी ने कहा कि जेई को भेजकर सड़क निर्माण की गुणवत्ता जांची जाएगी। ग्रामीण बच्चालाल चौधरी, राजू चौधरी, कमल चौधरी, मस्तराम चौधरी आदि ने बताया कि घटिया सामान का प्रयोग कर सड़क बनाई जा रही है। जेई धर्मेन्द्र कुमार ने कहा कि मजदूरों द्वारा सड़क की सफाई नहीं की गई। गुणवत्ता के साथ समझौता नहीं होगा।

1070 युवाओं को मिला 48 करोड़ का ऋण, मुख्यमंत्री योगी बोले, अपना रास्ता खुद बनायें युवा

मेरठ (आभा)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को कहा कि अगर सरकार युवाओं के साथ खड़ी हो, तो वे (युवा) प्रत्येक चुनौतियों का सामना करते हुए अपना रास्ता खुद बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं की प्रगति में आने वाली हर बाधा को दूर करने के लिए सरकार संकल्पित है। योगी ने युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत मेरठ एवं सहारनपुर मंडल के 1,070 युवाओं को 48 करोड़ रुपये के ऋण वितरण के बाद आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। मुख्यमंत्री ने कहा, युवाओं के लिए चुनौती, चुनौती नहीं है।

–2047 में भारत एक विकसित राष्ट्र होगा – तेज से हो रहा है औद्योगिक विकास

अगर सरकार उनके साथ खड़ी हो तो वे चुनौतियों का सामना करते हुए अपना रास्ता खुद बना सकते हैं। उत्तर प्रदेश के युवाओं ने खुद को आगे बढ़ाने का काम किया है। योगी ने कहा कि बहुत सारे ऐसे युवा हैं, जो नौकरी न करके अपना खुद का कारोबार शुरू करना चाहते हैं और वह अपने मां–बाप पर आश्रित न होकर अपनी मेहनत से खुद की पहचान बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, अपनी मेहनत पर विश्वास करने वाले ऐसे युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए हम लोगों ने व्यवस्था दी है कि पहले चरण में पांच लाख रुपये तक ब्याज मुक्त कर्ज हम उपलब्ध्ध कराएंगे। योगी ने कहा कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए इसमें विशेष प्रावधान किया गया है और इस योजना का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिल सकेगा।

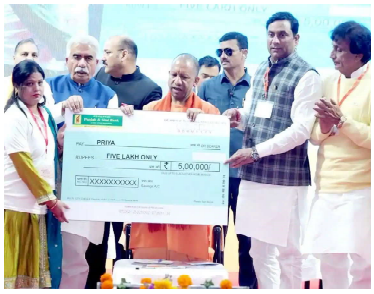

उन्होंने कहा कि 'मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना' के अंतर्गत अब तक ऋण लेकर जिन्होंने अपना कारोबार शुरू किया है, उन युवाओं ने सफलता की कहानी लिखी है और यह साबित किया है कि युवा के लिए चुनौती कोई चुनौती नहीं होती और यदि सरकार उनके साथ खड़ी हो जाए तो वह चुनौतियों का सामना करते हुए अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा, यह नए भारत का नया उत्तर प्रदेश है। मेरठ और सहारनपुर में इस योजना को आगे बढ़ाने में मुझे प्रसन्नता हो रही है और 1,070 (लाभार्थी) नये युवा उद्यमी इस क्षेत्र को दे रहे हैं। योगी ने कहा कि यह योजना राज्य को एक हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगी और भारत पांच हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह क्रम इसी प्रकार चलेगा तो 2047 में भारत एक विकसित राष्ट्र होगा। योगी ने पिछले आठ वर्ष में राज्य में सुरक्षा व्यवस्था, कानून–व्यवस्था और विकास का सिलसिलेवार ब्यौरा देते हुए दावा किया कि आज प्रदेश में निवेश चारों ओर से आ रहा है और हर जिले में उद्योग लग रहे हैं। साढ़े सात लाख युवाओं को हम इसमें नौकरी दे चुके हैं। इस कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के मंत्री राकेश सचान, राज्य मंत्री सौमेंद्र तोमर व दिनेश खटीक और मेरठ के सांसद अरुण गोविल और डॉक्टर लक्ष्मीकांत वाजपेयी समेत कई प्रमुख लोग मौजूद थे। कार्यक्रम से पहले मुख्यमंत्री ने योजना के तहत कारोबार शुरू करने वाले युवाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री ने इससे पहले मेजर ध्यानचंद स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया और कहा कि इसे अक्टूबर–नवंबर तक राष्ट्र को समर्पित कर दिया जाएगा।

स्वैच्छिक शिविर में 20 ने किया रक्तदान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को पटेल एस.एम.एच. हास्पिटल गोटवा में प्रबंधक एवं वरिष्ठ चिकित्सक डा. वी.के. वर्मा के संयोजन में बस्ती चेरीटेबल ब्लड बैंक के सहयोग से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। डा. वर्मा ने बताया कि शिविर में कुल 20 लोगों ने रक्तदान किया। कहा कि रक्तदान को महादान इसलिये कहा गया है कि हम इसके द्वारा दूसरों की जान बचाने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

रक्तदान करने वालों को प्रमाण–पत्र देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। स्वैच्छिक रक्तदान शिविर को सम्पन्न कराने में डा. आलोक रंजन, डा. आर.एन. चौधरी, डा. चन्दा सिंह बस्ती चेरीटेबल ब्लड बैंक के विजय कुमार सिंह, आलोक चौधरी, विजय कुमार शुक्ल ने योगदान दिया।

राज ठाकरे ने गंगाजल की शुद्धता पर उठाये सवाल

मुम्बई (आभा)। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने गंगा नदी की स्वच्छता पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि देश की कोई भी नदी साफ नहीं है। ठाकरे ने मनसे की स्थापना के 19 साल पूरे होने के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में यह टिप्पणी की। मनसे प्रमुख ने कहा कि उनकी पार्टी के नेता बाला नंदगांवकर महाकुंभ से पवित्र जल लेकर आए थे, लेकिन उन्होंने इसे पीने से इनकार कर दिया। राज ठाकरे ने कहा, 'मैंने गंगा नदी की स्थिति के बारे में सोशल मीडिया पर कई वीडियो देखे हैं। मैंने कुछ लोगों को नदी में अपना शरीर खुजलाते और स्नान करते भी देखा।'

राज ठाकरे ने दावा किया कि कोई भी नदी साफ नहीं है। उन्होंने कहा, 'जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे तब से ही मैं यह दावा सुनता आ रहा हूं कि गंगा जल्द ही साफ हो जाएगी। अब इस मिथक से बाहर आने का समय आ गया है।' उन्होंने कहा कि लोगों को अंधविश्वास से बाहर निकलना चाहिए। मैं उस गंगा के गंदे पानी को नहीं छू सकता जहां करोड़ों लोगों ने स्नान किया हो। ठाकरे ने सवाल किया, श्अगर लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए प्रयागराज गए और गंगा में स्नान किया, तो क्या वे सच में अपने पापों से मुक्त हो सकते हैं?श उन्होंने कहा कि अब आप विश्वास और अंधविश्वास के बीच का अंतर समझ गए होंगे।

सड़क हादसों पर लगाम के लिये अफसरों और कर्मचारियों का होगा प्रशिक्षण

लखनऊ (आभा)। यूपी में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए परिवहन विभाग के शीर्षस्थ अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों को यूपी सरकार ट्रेनिंग दिलाएगी। इसके बाद उन्हें आधुनिक तकनीक से लैस भी किया जाएगा। इसके लिए रायबरेली में स्थित एक इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च (आईडीटीआर) को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्य के परिवहन आयुक्त ब्रजेश नारायण सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का खास ध्यान विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों को नवीनतम तकनीक से प्रशिक्षण देने पर है। सिंह ने बताया कि इसी क्रम में अब परिवहन विभाग के शीर्षस्थ अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों का प्रशिक्षण कराकर उन्हें तकनीक से लैस भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके लिए रायबरेली में स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च (आईडीटीआर) को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अपर परिवहन आयुक्त (प्रशासन) की अध्यक्षता में प्रशिक्षण प्रकोष्ठ का गठन भी किया है। बस्ती के संभागीय परिवहन अधिकारी फरीदउद्दीन को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का नोडल अधिकारी बनाया गया है। सिंह ने बताया कि प्रयास है कि प्रदेश के परिवहन अधिकारियों के लिये स्थायी एवं आधुनिक प्रशिक्षण प्रणाली स्थापित की जा सके। उन्होंने कहा कि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में विभागीय अधिकारियों को नवीनतम प्रौद्योगिकी, डेटा आधारित नीति निर्माण, प्रवर्तन रणनीतियों और ई–गवर्नेंस आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा और यहां सभी स्तर के अधिकारियों (आरआई, पीटीओ, एआरटीओ, आरटीओ, डीटीसी, एटीसी) आदि के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित होंगे।

उन्होंने बताया कि इसके साथ ही नवागंतुक अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण तथा विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिये रिफ्रेशर कोर्स एवं विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित होंगे। सिंह ने बताया कि परिवहन अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम का विकास उत्तर प्रदेश की आवश्यकताओं, देश में परिवहन क्षेत्र में हो रहे बदलावों तथा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के निर्देशों के अनुरूप किया जाएगा। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर परिवहन क्षेत्र में हो रहे नवीनतम विकास को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा, जिससे अधिकारीगण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रही नवीनतम जानकारियों से भी अवगत हो सकें।उन्होंने बताया कि पाठ्यक्रम को व्यावहारिक अनुभव और केस स्टडी आधारित प्रशिक्षण मॉडल के अनुसार विकसित किया जाएगा, जिससे अधिकारी नीति निर्माण व प्रवर्तन प्रक्रियाओं को समझ सकें और उन्हें आधुनिक परिवहन चुनौतियों का प्रभावी समाधान भी मिल सकें। सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से परिवहन अधिकारियों को सड़क कर संग्रह, परमिट प्रणाली, प्रवर्तन तकनीकों और आधुनिक ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम पर नियमित प्रशिक्षण मिलेगा, जिससे उनकी प्रशासनिक दक्षता में भी वृद्धि होगी।

टैरिफ विवाद को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर भड़के बाबा रामदेव

नागपुर (आभा)। पतंजलि आयुर्वेद के सह–संस्थापक एवं योग गुरु रामदेव ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ विवाद पर टिप्पणी की है। ट्रंप पर भड़कते हुए शुल्क नीति के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में बाबा रामदेव ने कहा कि यह एक तरह का आर्थिक आतंकवाद और शुल्क आतंकवाद है और यह दुनिया को एक अलग युग में ले जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्व में बन रहे खतरनाक हालात के बीच, 'हमें भारत को शक्तिशाली और विकसित बनाने की जरूरत है, क्योंकि कुछ शक्तिशाली देश विश्व को विनाश की ओर ले जाना चाहते हैं।श रामदेव नागपुर के मिहान में पतंजलि फूड एवं हर्बल पार्क के उद्घाटन के अवसर पर संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे।

वहीं, रामदेव ने कैलिफोर्निया में एक हिंदू मंदिर को विरूपित करने की घटना की निंदा करते हुए रविवार को कहा कि भारत को धार्मिक आतंकवाद पर अंकुश लगाने के लिए पहल करनी चाहिए। रामदेव ने यहां एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से कहा कि मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज लोगों के आदर्श हैं, न कि मुगल सम्राट औरंगजेब।

कैलिफोर्निया में एक प्रमुख हिंदू मंदिर को कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने विरूपित किया और दीवारों पर भारत विरोधी नारे लिख दिये। यह अमेरिका में समुदाय के पवित्र स्थलों को निशाना बनाने की एक नई घटना है।

मणिपुर में फिर भड़क गई हिंसा

इम्फाल (आभा)। मणिपुर के कांगपोकपी जिले के विभिन्न हिस्सों में कुकी प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच शनिवार को हुई झड़पों में एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई, जबकि महिलाओं और पुलिसकर्मियों समेत 40 से अधिक लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। मृतक की पहचान लालगौथांग सिंगसिट के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि 30 वर्षीय सिंगसिट को कीथेलमानबी में झड़पों के दौरान गोली लगी और अस्पताल ले जाते समय उसकी मौत हो गई।

कुकी बहुल जिले में प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़पें उस समय हुईं, जब पुलिस ने उन्हें

तितर–बितर करने के लिए आंसू गैस का इस्तेमाल किया। प्रदर्शकारी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के राज्य भर में मुक्त आवाजाही की अनुमति देने के निर्देश का विरोध कर रहे थे। स्थिति तब और बिगड़ गई जब प्रदर्शनकारियों ने निजी वाहनों में आग लगा दी और इंफाल से सेनापति जिले की ओर जा रही राज्य परिवहन की बस को रोकने का प्रयास किया।

लोक अदालत में 74 हजार से अधिक मामले निस्तारित

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में जनपद न्यायालय, ग्राम न्यायालय, तहसील, राजस्व न्यायालय में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस दौरान 74 हजार 116 वादों का निस्तारण किया गया

जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण विनय कुमार द्विवेदी के मार्गदर्शन व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अपर जिला जज अनिल कुमार की देखरेख में लोक अदालत का आयोजन किया गया

लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के 74 हजार 116 वादों का निस्तारण किया गया। बैंक ऋण व संबंधित प्री–लिटिगेशन स्तर पर 65 हजार 091 मामलों और न्यायालयों के 9025 वादों का निस्तारण सुलह–समझौते के आधार पर कराया गया।

मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण द्वारा कुल 72 मामलों निस्तारित कर 1.53 करोड़ 77 हजार 200 रुपये क्षतिपूर्ति आदा करने का निर्णय किया। आपराधिक वादों के निस्तारण में 3 लाख 79 हजार 380 रुपये अर्थदण्ड एवं अन्य मामलों में कुल 3 करोड़ 22 लाख 63 हजार 333 रुपये और कुल मिलाकर 3 करोड़ 26 लाख 42 हजार 713 रुपये की धनराशि वसूल की गई।

इसके अतिरिक्त बैंक ऋण के 423 मामलों को निस्तारित कराकर बैंकों द्वारा 3 करोड़ 61 लाख 43 हजार 079 रुपये की धनराशि पर समझौता किया गया। परिवार न्यायालय से कुल 60 मामले व उपभोक्ता फोरम के 44 मामले निस्तारित हुए।

लोक अदालत में पीठासीन अधिकारी मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण अखिलेश दूबे, प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय आराधना रानी, अपर जिला जज प्रथम शिव चन्द, अपर जिला जजः विशेष न्यायाधीश (ईसी एक्ट) राम करन यादव, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट आशीष कुमार राय, सिविल जज (सीडी) अमित मिश्रा समेत न्यायिक अधिकारी ने प्रतिभाग लिया।

उक्त राष्ट्रीय लोक अदालत में जिला कारागार के बंदियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प कला की प्रदर्शिनी भी लगाई गई। इस दौरान डीएम रवीश गुप्ता, एसपी अभिनंदन एवं जिला कारागार अधीक्षक अंकेक्षिता श्रीवास्तव आदि का योगदान रहा।

वार्षिकोत्सव में बच्चों ने दिया एकजुटता का संदेश,पुरस्कार पाकर खिले चेहरे

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती।स्वामी दयानंद विद्यालय सुरतीहट्टा बस्ती में बच्चों ने वार्षिक उत्सव में मनोरंजक एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का शुभारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना के द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि अशोक सिंह अध्यक्ष न्याय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश ने दीप प्रज्वलन करते हुए बच्चों को अंधकार से प्रकाश की ओर चलने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे में एक उज्ज्वल भविष्य छिपा है जो शिक्षकों के मन्द मन्द अनुशासन पूर्ण शिक्षण प्रशिक्षण से चमक जाता है। इसके अलावा अरुण भारती, गोपेश्वर त्रिपाठी, आनन्द राजपाल, सूर्य कुमार शुक्ल, सुनील गुप्ता, सतीश कुमार, विकास बरनवाल, रविन्द्र पासवान आदि अतिथियों ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आदित्यनारायण गिरी ने अभिभावकों से बच्चों का सहयोग करने की अपील की। अतिथियों के स्वागत गीत के पश्चात अनीशा मिश्रा और शिवांगी के नेतृत्व में बच्चों ने नमस्ते जी कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों को बताया कि नमस्ते ही हमारा अंतर्राष्ट्रीय अभिवादन है। इसके अतिरिक्त राजस्थानी, वसन्त एवं होली गीत प्रस्तुत कर बच्चों ने पूरे देश को एक

सूत्र में बांध दिया। काव्यावली, विदाई गीत और अरमान कविता के द्वारा बच्चों ने सभी वर्ग के लोगों को देश के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करा दिया। इसके अलावा बच्चों ने प्रेरणादायक गुरुकुल नाटक का मंचन कर अपनी वैदिक संस्कृति के भी दर्शन के दर्शन करवाए। नर्सरी के बच्चों ने अहा टमाटर बड़े मजेदार गीत प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी। इसके अलावा बड़ी भली है अम्मा मेरी, योग स्तूप, चल रे साथी चल गीत आदि के द्वारा अभिभावकों एवं अतिथियों का मन मोह लिया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने बच्चों के कार्यक्रम की जोरदार सराहना की विद्यालय की ओर से अतिथियों को वैदिक साहित्य भेंटकर उनका सम्मान किया गया।विद्यालय के प्रबन्धक ओमप्रकाश आर्य ने बताया कि वार्षिक उत्सव से बच्चों के कौशल में निखार आता है और अन्य बच्चों को उनके प्रदर्शन से प्रेरणा प्राप्त होती है। प्रधानाध्यापक गरुण ध्वज पाण्डेय ने उपस्थित अतिथियों और अभिभावकों के लिए आभार जताया। समापन पर योगेश शुक्ल प्रधानाचार्य श्रीकृष्ण इण्टर कालेज बस्ती द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरित किया गया और सहभोज कराया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रियांशु, तिलक राज, अमरेंद्र, गौरव, तुलसी, आदर्श, आयुष, मयंक कुमार, अंश मोदनवाल, अतुल, रिमझिम, अनुराधा, अमृता, प्रिया, राजेश्वरी, साक्षी कुमारी, अर्पिता चौरसिया, दृष्टि मोदनवाल, उज्जवल, शिव, सत्यम, शालिनी, अनुराधा, नंदिनी, पायल, आन्या, वंशिका, वैष्णवी, कार्तिकेय, प्रीतम भारती, शिवांश रावत, अतुल्य, सुमन, कृष्ण, हिमांशु, प्रज्ञा, प्रतिमा, श्याम, रूही, शानवी, अमन राय, अंश, आकर्षित, तन्नू, नैना, अनमोल, यशस्वी, अतुल राज, पीयूष कुमार, पुनीत राज सहित अनेक बच्चे उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 10 मार्च 2025 सोमवार

सम्पादकीय

ट्रम्प की नीतियां और आशकायें

अमरीका का राष्ट्रपति पद संभालने के साथ डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर दिए वक्तव्यों, निर्णयों तथा विदेशी नेताओं के साथ व्यवहार से निःसंदेह, अमरीकी नीतियों और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को लेकर आशंकाएं पैदा हुई हैं। यह तो अनुमान था कि वे जो बाइडेन की नीतियों में व्यापक बदलाव लाएंगे, लेकिन इस सीमा तक जाएंगे इसकी कल्पना शायद ही किसी ने की होगी। पश्चिम एशिया की समस्या पर यह वक्तव्य देकर उन्होंने हलचल मचा दी कि गाजा पट्टी पर कब्जा कर उसका पुनर्निर्माण करेंगे एवं नए सिरे से बसाएंगे। रूस–यूक्रेन युद्ध पर उनकी नीति उलट गई है। वे रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से सीधा संपर्क कर बातचीत कर रहे हैं और ऐसा लगता है कि जैसे दोनों के बीच समझौता तय हो गया है। यूरोपीय देशों को वे यूक्रेन को सैन्य व अन्य सहयोग पर लगातार खरी–खरी सुना रहे हैं।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ ह्वाइट हाऊस की संयुक्त पत्रकार वार्ता में उनकी बहस हुई। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को तो ह्वाइट हाऊस से निकाला गया। साफ था कि ट्रम्प उन्हें युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए डांट रहे हैं कि आप तृतीय विश्व युद्ध कराने की ओर बढ़ रहे हैं। इस तरह का व्यवहार किसी राष्ट्र प्रमुख का कभी देखा नहीं गया। अमरीका सहित विश्व भर में ट्रम्प विरोधियों की बड़ी संख्या है तथा विश्व को अपने किस्म की व्यवस्था देने की बौद्धिक, वित्तीय, व्यावसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक राजनीतिक आदि व्यवस्थाएं देने में लगे राज्य, गैर राज्य शक्तियां–संगठन–समूह आदि ट्रम्प को समाज एवं विश्व का खलनायक बनाने की होड़ में लगे हैं। सामान्य तौर पर लगता है कि कोई नासमझ या सिरफिरा व्यक्ति अमरीकी राष्ट्रपति पद पर आसीन हो गया है। व्यवहार ऐसा है जो होना नहीं चाहिए। क्या यही सच है? न भूलिए कि ट्रम्प अमरीकी राष्ट्रपति हैं और अमरीका की शिक्षित जनता ने उन्हें सीधे निर्वाचित किया है। ऐसा व्यक्ति न सिरफिरा हो सकता है और न बिना सोचे–समझे या गैर योजना से कुछ करेगा। इसलिए मान लीजिए कि ट्रम्प सुनियोजित तरीके से अपनी रणनीति के तहत बढ़ रहे हैं और उनके निश्चित लक्ष्य हैं।

संसद के संयुक्त संबोधन में उन्होंने अमरीका और पूरे विश्व के लिए अपनी कार्ययोजना को रख दिया है। यह बात अलग है कि वर्तमान विश्व की संरचनाओं, जटिलताओं और उथल–पुथल की स्थिति में ट्रम्प के लिए इच्छित लक्ष्य पाना कठिन है। इसे वे और उनके सलाहकार भी समझ रहे हैं। 2020 में सत्ता से जाने के बाद उन्होंने कुछ घोषणाएं की थीं और पिछले करीब डेढ़ वर्ष से उन्होंने चुनाव अभियान में जनता के समक्ष सारी बातें रखीं। किसी निष्कर्ष पर पहुंचने या विश्व भर में शक्तिशाली अतिवादी इकोसिस्टम और बनाए गए नैरेटिव से बाहर निकलकर उनके व्यवहार से आए कुछ त्वरित परिणामों पर दृष्टि डालिए। क्या इमैनुएल मैक्रों और जेलेंस्की के साथ लाइव विवाद के बाद इस इकोसिस्टम द्वारा जो नैरेटिव बनाकर डर और आशंकाएं पैदा की जा रही हैं उसकी परिणति भी वैसे ही सामने आई है?

ट्रम्प ने यूक्रेन को दी जाने वाली सारी सहायता रोक दी। यानी यह अगला अतिवादी कदम था जिससे पता चलता था कि वो जो कुछ कह रहे हैं उसे करने की उनकी तैयारी है। पहला परिणाम यह हुआ कि यूरोपीय देशों ने लंदन में बैठे तथा यूक्रेन युद्ध की समाप्ति के लिए एक रूप–रेखा बनाने पर सहमति व्यक्त की। यद्यपि फ्रांस की ओर से डोनाल्ड ट्रम्प के विरुद्ध बयान आ रहे हैं किंतु उस बैठक से ऐसा वक्तव्य नहीं आया।जब ट्रम्प ने कहा कि वह हमास और फिलिस्तीनियों को निकाल बाहर करेंगे तथा गाजा पर कब्जा कर इसका निर्माण कर आगे बसी बसाएंगे तो कई देशों ने विरोध किया था। ट्रम्प के प्रभाव में ही हमास ने युद्ध विराम समझौता कर इसराइली बंधकों को रिहा करना शुरू किया था।

ट्रम्प का रुख अभी भी वही है। इस तरह अभी तक ट्रम्प के कदमों से दुनिया में हलचल तो मची किंतु कोई विपरीत परिणाम नहीं आया है। युद्ध रोकना है तो पुतिन को विश्वास में लेकर बात करनी होगी। ट्रम्प रक्षा नीति, विदेश नीति, व्यापार नीति, आर्थिक नीति, वित्तीय नीति से संबंधित सभी प्रमुख लोगों के साथ लगातार बैठक कर रहे हैं। सहमति और निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद ही वह बयान देते हैं या कदम उठाते हैं। अमरीका विश्व में 1.7 खरब डालर के सर्वाधिक व्यापार घाटे में है। उनके टैरिफ के प्रत्युत्तर में कनाडा, मैक्सिको, चीन आदि ने भी इस तरह जवाबी टैरिफ लागू किया है। इससे डर इसलिए पैदा हुआ है कि अभी तक की व्यवस्था में उथल–पुथल जैसा है। ट्रम्प द्वारा लगातार भारत का नाम लेने के बावजूद भारतीय सामग्रियों पर प्रतिक्रियात्मक टैरिफ नहीं लगा है। हां, 2 अप्रैल से वैश्विक व्यापार नीति के तहत समानुपातिक शुल्क में भारत भी आएगा। भारत का रुख संतुलित है, प्रतिक्रियात्मक कदमों की घोषणा नहीं की गई क्योंकि अमरीका सर्वाधिक व्यापारिक लाभ देने वाला सांझेदार है।

नेताओं की बदजुबानी पर कैसे लगे लगाम

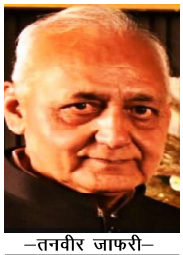

—तनवीर जाफरी—

भारत को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है। लोकतंत्र एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें लोग अपने चुने हुए प्रतिनिधियों को वोट देकर एक ऐसी सरकार चुनते हैं जिस में सभी को समान अधिकार होते हैं। लोकतंत्र समानता, भागीदारी, और मौलिक अधिकारों के सिद्धांतों पर आधारित होता है। संक्षेप में एक लोकतान्त्रिक सरकार जनता की सरकार होती है जो जनता द्वारा,जनता के लिये चुनी जाती है। परन्तु प्रायः यही देखा गया है कि जनता की सेवा के नाम पर चुनावी पोस्टर,बैनर्स व कटआउट में हाथ जोड़े हुये वोट मांगते दिखाई देता नेता चुनाव जीतने के बाद जनता का प्रतिनिधि नहीं बल्कि जनता का 'बॉस' बना नजर लगता है। सरकारी सुरक्षा, स्वागत,फूल– माला, जय जयकार,भाषणबाजी,अपने परिजनों व चेलों को फायदा पहुँचाना,जमकर लूट खसोट करना,दबंगई व चौधर दिखाना मंत्री बनने की जुगत भिड़ाना,यदि मंत्री हैं तो मुख्यमंत्री पद के लिये लालायित रहना उज्जवल राजनैतिक भविष्य की खातिर दल बदल की संभावनाओं को तलाशना आदि इसी तरह की 'समाजसेवा' में माननीय के 5 वर्ष बीत जाते हैं। और जनता 5 वर्षों बाद जब स्वयं को ठगा महसूस करती है तो ज़्यादा से ज़्यादा उसकी जगह किसी दूसरे का चुनाव कर लेती है। और वह भी अपने पूर्ववर्ती के नक्शे कदम पर चलने लगता है।

माननीयों द्वारा जनता की जरूरतों से मुंह मोड़ने और सारा ध्यान 'अपनी जरूरतों' को पूरा करने में लगाने का ही नतीजा है देश में बढ़ती बेरोजगारी,मंहगाई,विकास बाधित होना,बिजली पानी सड़क स्वास्थ व शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतें समुचित तौर से आम जनता तक न पहुँच पाना और अराजकता व कानून व्यवस्था जैसी समस्याओं का लगातार बढ़ते जाना। और जब यही स्थिति अनियंत्रित होने लगती है उस समय यही शातिर नेता जनता से वोट झटकने के लिये तरह तरह के हथकंडे अपनाते हैं। समाज को धर्म व जातियों के आधार पर विभाजित करते हैं। क्षेत्र व भाषा जैसे भावनात्मक मुद्दे उछाल कर सस्ती लोकप्रियता अर्जित करते हैं,मंदिर मस्जिद जैसे विवादों को पहले खड़ा करते हैं फिर इसे हवा देते हैं। वैज्ञानिक युग में अवैज्ञानिक तर्क देकर लोगों का ध्यान भटकते हैं। और इसी 'शातिर सियासत' का ही एक पहलू यह भी है कि नेताओं द्वारा मतदाताओं को आकर्षित करने के लिये तरह तरह की मुफ्त योजनायें लागू की जाती हैं। जो सरकारें या पार्टियां इन योजनाओं को स्वयं चलाती हैं वे इन योजनाओं को बेहद जरूरी व जनहितकारी बताती हैं जबकि अन्य दलों के नेताओं को ऐसी योजनायें 'मुफ्त की रेवड़ी' नजर आती हैं। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आम आदमी पार्टी कांग्रेस पार्टी द्वारा चलाई जा रही ऐसी योजनाओं को 'मुफ्त रेवड़ी कल्चर ; बता चुके हैं और इससे बचने की सलाह भी दे चुके हैं। परन्तु ऐसी योजनाएं जब केंद्र सरकार द्वारा या मध्यप्रदेश, हरियाणा,राजस्थान, छत्तीसगढ़ अथवा अन्य किसी भाजपा शासित राज्य द्वारा लागू की जाती है तो वह रेवड़ी न होकर 'जरुरत' बन जाती है। इतनी बड़ी जरुरत कि मोदी सरकार को अपनी इसी 'महान उपलब्धि' पर अपनी पीठ थपथपानी पड़ती है कि वह '80 करोड़ देशवासियों को मुफ्त राशन बाँट रही है'। इसी वर्ग को वह मतदाताओं की 'लाभार्थी श्रेणी' भी समझती है। यदि इस तर्क को मान लिया जाये तो यही 'मुफ्त राशन ग्रहण' करने वाला वर्ग उन सत्ताधीशों को उस मुकाम पर पहुंचाता है जिसके लिये वे तरह तरह के छलकपट,प्रपंच,झूठ फरेब,ध्रुवीकरण आदि सभी हथकण्डों का सहारा लेते रहते हैं। इतना ही नहीं इन्हीं 'मुफ्त खोर' मतदाताओं की कृपा से शीर्ष पदों पर पहुंचे ऐसे नेताओं में अहंकार भी इस कद्र भर जाता है कि जिस जनता का वोट लेते समय यह अवसरवादी व स्वार्थी नेता इन्हें श्जनता जनार्दनश यानी जनता के रूप में ईश्वर कहकर सम्बोधित करते हैं इन्हीं नेताओं द्वारा इसी जनता को 'भिखारी' कहने में भी इन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होती। जबकि स्वयं प्रधानमंत्री मोदी हर भारतवासी को 'ईश्वर का अंश' बता चुके हैं। परन्तु ईश्वर रुपी जनता जनार्दन का ऐसा ही अपमान पिछले दिनों पूर्व केंद्रीय मंत्री व वर्तमान में मध्य प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा करते सुना गया। उन्होंने एक सभा में कहा कि अब तो सरकार से भीख मांगने की आदत लोगों को पड़ गई है। नेता आते हैं तो उनको एक टोकरी कागज मिलते हैं। मंच पर माला पहनाएंगे और पत्र पकड़ा देंगे... यह अच्छी आदत नहीं है। लेने के बजाय देने की मानसिकता बनाइए। भिखारियों की फौज इकट्ठा करने से यह समाज मजबूत नहीं होगा। यह समाज को कमजोर करना है।

'भिखारी' शब्द के सन्दर्भ में यहाँ यह वर्णित करना भी जरूरी है कि हमारे देश के 'यशस्वी प्रधानमंत्री' स्वयं अपने कई साक्षात्कार में बता चुके हैं कि उन्होंने 35 /40 वर्षों तक भीख मांगकर अपना जीवन गुजारा है। जिस भीख की बात मोदी जी करते हैं उस भीख का अर्थ तो है कि खुद बिना मेहनत किये दूसरों की कमाई खाना। परन्तु यदि आप जनता के टैक्स के पैसों से जनता के लाभ के लिये कोई योजनाएं लाते हैं तो वह भीख कैसे हो गयी ? और यदि यह भीख है तो जनता के इन्हीं पैसों से सत्ताधीशों व निर्वाचित सदस्यों का ऐश करना,इन्हीं पैसों से अपनी सुरक्षा पर खर्च करना,तमाम तरह की सब्सिडी लेना निर्वाचित होते ही फर्श से अर्श पर पहुँच जाना,कर्ज मुक्त हो जाना,रातोंरात धन पति बन जाना यह सब क्या है ? एक और बात, हमारे देश में एक विशेष समुदाय बल्कि श्जाति विशेष व सम्मानित श समुदाय ऐसा भी है जो बड़े गर्व से यह कहता है कि भिक्षा माँगना हमारे संस्कारों में शामिल है। इसके अलावा स्वयं को पुण्यार्थी समझने वाले दानदाताओं ने ही पूरे भारत में भिखारियों की लंबी फौज बना दी है। हमारे धर्म प्रधान देश का शायद ही कोई ऐसा धर्म स्थान हो जहां भिखारी डेरा न जमाये रहते हों।

परन्तु यदि जनता अपने क्षेत्र की समस्याओं से संबंधित मांगपत्र अपने निर्वाचित प्रतिनिधि या राज्य के मंत्री को सौंपती है तो यह तो उसका अधिकार है ? अपने या प्रदेश के 'जनसेवक' से अपनी समस्याएं सांझी नहीं करेगी तो किस से करेगी ? आपको विधायक मंत्री बनाया किस लिये गया है ? आप आखिर हैं किस मर्ज की दवा? क्या जनता के टैक्स के पैसों पर मुफ्तखोरी करने का अधिकार केवल ऐसे माननीयों का ही है जो जनता को वोट मांगते समय 'भगवान' और मंत्री बनने के बाद 'भिखारी' बताने लगे ? जनता का अपमान करने वाले ऐसे बदजुबान, खुदगर्ज,अहंकारी व सत्ताभोगी नेताओं से न केवल सचेत रहने बल्कि इनका बहिष्कार करने की भी सख्त जरुरत है।

आक्रांता मुगल शासक हमारे आदर्श कैसे?

— ललित गर्ग—

मुगल बादशाह औरंगजेब की क्रूरता, अत्याचार एवं यातनाएं एक बार फिर बॉलीवुड की फिल्म छावा के कारण सुर्खियों में है। इस बार मामला सिर्फ इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं है बल्कि राजनीति में भी गर्मा गया है। समाजवादी पार्टी के नेता अबू आजमी के बयान ने महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल ला दिया है एवं देश के बहुसंख्य समाज की भावनाओं को आहत किया है। भारत में आज भी एक ऐसा वर्ग है जो इस्लामिक कट्टरता के साथ जुड़ने में गर्व एवं गौरव की अनुभूति करता है, भले ही इससे देश की एकता एवं अखण्डता क्षत–विक्षत होती हो। इस्लाम के नाम पर जिसने हजारों हिंदू मंदिरों को ध्वस्त किया, तलवार की नोक पर बड़ी संख्या में लोगों को जबरन मुसलमान बनाया, ऐसे क्रूर एवं सांप्रदायिक शासक औरंगजेब को नेकदिल और महान शासक बताना, आखिर किस तरह की सोच है? भारत के अतीत को जघन्य अपराधों, कट्टरतावादी सोच एवं यातनाओं से सींचने वाले मुगल शासकों के प्रति यह कैसा मोह एवं ममत्व है? हिन्दू धर्म एवं संस्कृति पर आक्रमण करने वाले हमारे आदर्श कैसे हो सकते हैं? भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि को कुचलने वाले महान् शासक कैसे हो सकता है? इन प्रश्नों को लेकर देशभर में छिड़ी बहस हमें आत्मावलोकन एवं मंथन का अवसर दे रही है।

फिल्म 'छावा' कोरी फिल्म ही नहीं, हिन्दुओं को संगठित करने का अभियान है, जिसने औरंगजेब के क्रूर एवं बर्बर चरित्र को प्रस्तुत किया है, यह फिल्म मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक और छत्रपति शिवाजी महाराज के बड़े बेटे संभाजी महाराज की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में संभाजी के साहस, बलिदान और औरंगजेब के अत्याचारों को दिखाया गया है। संभाजी को औरंगजेब ने छलपूर्वक 1689 में क्रूरता से मरवा दिया था, जिसे फिल्म में भावनात्मक ढंग से पेश करने की सफल एवं सार्थक कोशिश हुई है। इस फिल्म में समाजवादी पार्टी के नेता और महाराष्ट्र विधायक अबू आजमी ने इतिहास को गलत ढंग से पेश करने का आरोप लगाते हुए औरंगजेब की तारीफ करके विवाद को और हवा दे दी। आजमी ने कहा, औरंगजेब क्रूर शासक नहीं था। उसने कई मंदिर बनवाए और उसके शासन में भारत सोने की चिड़िया था। आजमी ने यह भी दावा किया कि औरंगजेब और संभाजी के बीच की लड़ाई धार्मिक नहीं, बल्कि सत्ता की थी। इस तरह मुगल आक्रांताओं की तारीफ करना सपा के डीएनए में है। हो सकता है आजमी का यह औरंगजेब प्रेम एवं मुस्लिम कट्टरतावादी सोच हो, लेकिन औरंगजेब ने संभाजी महाराज को 40 दिनों तक जो यातनाएं दीं, वह क्या थी? उनकी आंखें निकाली गईं, जीभ काटी गई, उनके शरीर को लहूलुहान करके उस पर नमक छिडका और फिर उनकी हत्या कर दी गई, इस तरह क्रूरता एवं बर्बरता बरतने वाले शासक को कैसे आदर्श कहा जाये? असंख्य महिलाओं एवं बच्चों पर अत्याचार करना, जबरन धर्म परिवर्तन कराना, हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, देश की समृद्धि का गलत उपयोग करना कैसे प्रेरणास्पद हो सकता है?

औरंगजेब पोत राज्यों, राजपूताना और मराठा शासकों के परिवारों का अपहरण कर लेता था और उन्हें बंधक बना लेता था। ताकि वह निर्विरोध शासन करते हुए सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य कर सके। उसने सभी गैर–मुस्लिम प्रजा और पोत राज्यों से धार्मिक असहिष्णुता कर "जजिया" वसूला। औरंगजेब एक असहिष्णु, क्रूर एवं कट्टरपंथी था और उसकी कट्टरता के कारण करोड़ों लोगों को कष्ट सहना पड़ा। शांति और बहुसंस्कृतिवाद की भूमि भारत में ऐसे अत्याचारी को आदर्श नहीं बनाया जाना चाहिए। यह पहली बार नहीं है जब औरंगजेब जैसे मुगल शासकों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन उमड़ा हो, जब दिल्ली की एक सड़क का नाम औरंगजेब रोड से बदलकर एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर रखा गया था, तब भी बहुत हाय–तौबा मचाई गयी थी। उस समय भी अनेक लोगों ने औरंगजेब को महान शासक बताया था। जबकि इतिहासकारों ने भी दर्ज किया है छल से छत्रपति संभाजी को पकड़ने के बाद औरंगजेब ने अत्याचार एवं अमानवीयता की सभी हद पार करते हुए जुल्म किए। औरंगजेब छत्रपति संभाजी को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर कर रहा था लेकिन छत्रपति ने सब प्रकार के कष्ट सहे लेकिन इस्लाम कबूल नहीं किया। जब फिल्मकार ने इस सच को सिनेमा के माध्यम से सबके सामने रखा तो अबू आजमी ने सच को स्वीकारने की बजाय इतिहास को ही झुठलाने का प्रयास किया। उनके बयान की पक्ष–विपक्ष सबने आलोचना की है। कुल मिलाकर, औरंगजेब की तारीफ करने पर चौतरफा घिरे सपा विधायक अबू आजमी को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया। उनके खिलाफ दो एफआईआर भी दर्ज की गई हैं जब मामला और बिगड़ गया तो अबू आजमी ने माफी मांगी। हालांकि, उनका कहना है कि उन्होंने जो कहा, वह इतिहासकारों के हवाले से कहा। लेकिन बड़ा प्रश्न है कि वे कौन से इतिहासकार हैं जिनका हवाला अबू आजमी दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि अबू आजमी सरीखे कुछ चाटुकार एवं चारण लोग इतिहासकारों में भी हुए हैं, कांग्रेस के शासन में ऐसे इतिहासकारों से मुगल शासन का महिमामंडित करके लिखवाया गया एवं स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर हिन्दुस्तान की रग–रग में उतारा गया है। औरंगजेब जैसे तानाशाही शासकों के क्रूर चेहरे को छिपाने के लिए झूठे–सच्चे कुछ किस्सों का सहारा लिया है। परंतु ये फर्जी इतिहासकार सच को छिपा नहीं सके। सिद्धांत, सच और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की ऐसी कोशिशों से बहुत नुकसान हो चुका है, अब इन मनसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जा सकता। सत्य को ढका जाता रहा है पर स्वीकारा नहीं गया।

बलात्कार, हिंसा पर कब टूटेगी समाज की चुप्पी?

– योगेश कुमार गोयल–

दुनियाभर में प्रतिवर्ष 8 मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है, जो सही मायनों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है। यह दिन लैंगिक समानता में तेजी लाने के लिए कार्रवाई के आह्वान का भी प्रतीक है। हालांकि चिंता का विषय यही है कि जिस 'आधी दुनिया' के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है, उसी आधी दुनिया को जीवन के हर मोड़ पर भेदभाव या अपराधों का सामना करना पड़ता है। यदि इसे भारत के ही संदर्भ में देखें तो शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब 'आधी दुनिया' से जुड़े अपराधों के मामले देश के कोने–कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम सिर्फ पुलिस–प्रशासन को कोसने और संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालने या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन करने की रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा ऐसी छोटी–मोटी घटनाएं तो आए दिन होती ही रहती हैं।

देश में कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर बीते कुछ वर्षों में कई तरह के कदम उठाने और समाज में 'आधी दुनिया' के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मर्यादा हनन या फिर अपहरण अथवा क्रूरता, 'आधी दुनिया' के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? इसका एक बड़ा कारण तो यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वो कड़ी कार्रवाई नहीं हो रही है, जिसके वो हकदार हैं और इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि महज कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने से रहे, जब तक उनका ईमानदारीपूर्वक कड़ाई से पालन न किया जाए। ऐसे मामलों में पुलिस–प्रशासन की भूमिका भी अनेक अवसरों पर संदिग्ध रहती है। पुलिस किस प्रकार ऐसे अनेक मामलों में पीड़िताओं को ही परेशान करके उनके जले पर नमक छिड़कने का कार्य करती है, ऐसे उदाहरण अक्सर सामने आते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के मद्देनजर अपराधियों के मन में पुलिस और कानून का भय कैसे उत्पन्न होगा और कैसे महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी की उम्मीद की जाए? जरूरत इस बात की महसूस की जाने लगी है कि पुलिस को लैंगिक दृष्टि से संवेदनशील बनाया जाए ताकि पुलिस पीड़ित पक्ष को पर्याप्त संबल प्रदान करे और पीड़िताएं अपराधियों के खिलाफ खुलकर खड़ा होने की हिम्मत जुटा सकें, साथ ही जांच एजेंसियों और न्यायिक तंत्र से भी ऐसे मामलों में तत्परता से कार्रवाई की अपेक्षा की जानी चाहिए। ऐसी घटनाओं पर अंकुश के लिए समय की मांग यही है कि सरकारें मशीनरी को चुस्त–दुरूस्त बनाने के साथ–साथ प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करें कि यदि उनके क्षेत्र में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के मामलों में कानून का अनुपालन सुनिश्चित नहीं हुआ तो उन पर सख्त कार्रवाई की जाए।

दिनदहाड़े सामने आती छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार या सामूहिक दुष्कर्म जैसी घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग के समान हैं और यह कहना असंगत नहीं होगा कि महज कड़े कानून बना देने से ही महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर अंकुश नहीं लगने वाला। आए दिन देशभर में हो रही इस तरह की घटनाएं हमारी सभ्यता की पोल खोलने के लिए पर्याप्त हैं। इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि बलात्कार और छेड़छाड़ के आए दिन जो मामले सामने आ रहे हैं, उनमें बहुत से ऐसे भी होते हैं, जिनमें पीड़िता के परिजन, निकट संबंधी या परिचित ही आरोपी होते हैं। दिल्ली पुलिस द्वारा जारी आंकड़ों में तो यहां तक कहा जा चुका है कि करीब 97 फीसदी मामलों में महिलाएं अपनों की ही शिकार होती हैं और यह समस्या सिर्फ दिल्ली तक ही सीमित नहीं है बल्कि महिला अपराधों के मामले में पूरी दुनिया की यही तस्वीर है। जहां देश में हर 53 मिनट में एक महिला यौन शोषण की शिकार होती है और हर 28 मिनट में अपहरण का मामला सामने आता है, वहीं संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार दुनिया में प्रत्येक तीन में से एक महिला का कभी न कभी शारीरिक शोषण होता है। दुनिया में करीब 71 फीसदी महिलाएं शारीरिक मानसिक प्रताड़ना अथवा यौन शोषण व हिंसा की शिकार होती हैं, दक्षिण अफ्रीका में हर छह घंटे में एक महिला को उसके साथी द्वारा ही मौत के घाट उतार दिया जाता है और अमेरिका में भी इसी प्रकार कई महिलाएं हर साल अपने ही परिचितों द्वारा मार दी जाती हैं।

जहां तक पीड़िताओं को न्याय दिलाने की बात है तो इसके लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट की मांग काफी समय से उठती रही है किन्तु हमारा सिस्टम कछुआ चाल से रेंग रहा है। ऐसे मामलों में कठोरता बरतने के साथ–साथ त्वरित न्याय प्रणाली की भी सख्त जरूरत है ताकि महिला अपराधों पर अंकुश लग सके। आज अगर समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बावजूद महिलाओं के प्रति अपराध और संवेदनहीनता के मामले बढ़ रहे हैं तो हमें यह जानने के प्रयास करने होंगे कि कमी हमारी शिक्षा प्रणाली में है या कारण कुछ और हैं। ऐसे कृत्यों में लिप्त रहने वाले लोगों की कुंठित मानसिकता के कारणों की पड़ताल करना भी बहुत जरूरी है, साथ ही सामाजिक मूल्यों का विकास करने के लिए विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को लागू करना और छात्रों को अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना समय की मांग है ताकि युवाओं की नकारात्मक सोच को परिवर्तित करने में मदद मिल सके, जिससे स्थिति में सुधार की उम्मीद की जा सके।

सड़क हादसे में 50 वर्षीय व्यक्ति की मौत

संवाददाता–महराजगंज। महराजगंज के सिन्दुरिया थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क हादसे में 50 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। घटना मुजहना बुजुर्ग ग्रामसभा में स्थित ईट भट्टे के पास रविवार को हुई। मृतक की पहचान सिसवनिया टोला निवासी गौरी प्रसाद के रूप में हुई है। वह ईंट भट्टे की ओर जा रहे थे। इसी दौरान भट्टे से लौट रहे एक ट्रैक्टर की चपेट में आ गए।

स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। घायल गौरी प्रसाद को 108 एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सिन्दुरिया थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ट्रैक्टर को अपने कब्जे में ले लिया है। उन्होंने कहा कि तहरीर मिलने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कृत्रिम अंग पाकर खिले दिव्यांगों के चेहरे

संवाददाता–गोण्डा। जिले में तीन दिवसीय दिव्यांग सहायता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में दिव्यांगों को निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण और ट्राईसाइकिल वितरण की सुविधा दी गई। शिविर के अंतिम दिन जिलाधिकारी नेहा शर्मा और मुख्य विकास अधिकारी अंकित जैन ने कार्यक्रम का समापन किया। मारवाड़ी युवा मंच, रोटरी क्लब और विनायक चौरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त प्रयास से यह आयोजन संभव हुआ। तीन दिनों में हजारों दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ,पैर,कान की मशीन,कैलिपर,बैसाखी,ट्राईसाइकिल और व्हीलचेयर निःशुल्क प्रदान की गई। डॉक्टरों की टीम ने दिव्यांगों की जांच कर उनकी आवश्यकता के अनुसार उपकरण निर्धारित किए। साथ ही स्वास्थ्य संबंधी दवाइयां भी वितरित की गईं। जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम दिव्यांगों के लिए वरदान साबित होगा। उन्होंने बताया कि जिन लोगों को चलने–फिरने में कठिनाई होती थी, उन्हें अब कृत्रिम

अंग और ट्राईसाइकिल मिलने से राहत मिलेगी। उन्होंने मारवाड़ी युवा मंच की सराहना करते हुए कहा कि वे हमेशा जनहित के कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। वहीं गोंडा मुख्य विकास अधिकारी अंकिता जैन ने कार्यक्रम के समापन के दौरान कहा कि यहां गोंडा ही नहीं बल्कि प्रदेश के कई जिलों से भी डॉक्टर और कर्मचारी आए थे जिनके देखरेख में या पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ है। विकलांगों को जिन भी कृत्रिम अंग और ट्राई साइकिल की आवश्यकता थी उन आवश्यकताओं को उन लोगों ने पूरा किया। उनके कार्य की जितनी भी सराहना की जाए कम है यह लोग हर वर्ष इसी तरीके से कार्यक्रम का आयोजन करके विकलांगों को एक बड़ी मदद देते हैं। वह मदद विकलांगों के लिए जीवन भर के लिए एक बड़ी सहायता बना करके सामने आती है। कार्यक्रम के समापन के दौरान डीएम और सीडीओ द्वारा विकलांगों के लिए लगाए गए स्टालों का भी निरीक्षण किया और मारवाड़ी युवा मंच के साथ रोटरी क्लब और विनायक चौरिटेबल ट्रस्ट के पदाधिकारी को इस आयोजन के लिए बधाई भी दी है।

नौतनवा में छापेमारी, तस्करी के लिए रखा लाखों का कपड़ा बरामद

संवाददाता–महराजगंज। भारत से नेपाल तस्करी के जरिए भेजे जाने वाली कपड़े की एक खेप नौतनवा में पकड़ी गई है। रविवार को कस्बे के बहादुर शाह नगर के एक मकान के बगल में बने गोदाम में मुखबिर की सूचना पर तहसील प्रशासन, पुलिस व एसएसबी की टीम ने छापेमारी की। गोदाम में रखे लाखों के कपड़े को रविवार बरामद किया गया। पुलिस तस्कर की पहचान करने में जुटी हुई है। जीएसटी विभाग से मामले की जांच के लिए संपर्क किया गया है।

इस समय नौतनवा व सोनौली से नेपाल को कपड़े की तस्करी जोरों पर है। पुलिस, एसएसबी एवं तहसील प्रशासन की कार्रवाई में सीमा से कहीं ना कहीं कपड़े की बरामदगी जरूर हो रही है। लेकिन यह धंधा बंद होने का नाम नहीं ले रहा है। नायब तहसीलदार सौरभ श्रीवास्तव के नेतृत्व में पुलिस एवं एसएसबी की टीम की छापेमारी कस्बे

के बहादुर शाह नगर में जिस जगह पर की गई, वह एक तबेले जैसा बनाया गया है। कार्रवाई में बरामद हुए 16 गट्ठर कपड़े में 1152 पीस लेडीज शूट एवं 102 पीस थान के कपड़े हैं। पुलिस ने सभी बरामद कपड़े को कब्जे में लेते हुए 113 कस्टम अधिनियम के तहत कार्रवाई कर नौतनवा कस्टम को सौंप दिया है।

पुलिस अब इस बात का पता लगाने में जुटी हुई है कि आखिर किस व्यक्ति का बनाया हुआ गोदाम है और किसने कपड़ा उस जगह पर डंप किया था?

धर्मेन्द्र कुमार सिंह, एसओ ने कहा कि मुखबिर की सूचना पर संयुक्त टीम ने छापेमारी कर 16 गट्ठर कपड़ा बरामद किया गया है। जिस जगह से कपड़ा बरामद हुआ है, उसके मालिक का पता लगाया जा रहा है। कपड़ा किसने उंप किया है, इसकी भी जांच की जा रही है। जीएसटी विभाग को भी जांच के लिए लिखते हुए कपड़े को नौतनवा कस्टम को सुपुर्द कर दिया गया है।

सीएम सामूहिक विवाह योजना का तीसरा चरणः 450 हिंदू और 39 मुस्लिम जोड़ों की शादी संपन्न, सभी को मिले उपहार

संवाददाता–गोण्डा। एक निजी पैराडाइज में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत तीसरे चरण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में चार ब्लॉक की गरीब परिवारों की कन्याओं का विवाह संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला अधिकारी नेहा शर्मा और सदर भाजपा विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस योजना के तहत कुल 744 जोड़ों ने पंजीकरण कराया था। आज 450 हिंदू जोड़ों का विवाह वैदिक मंत्रोच्चार के साथ और 39 मुस्लिम जोड़ों का निकाह इस्लामिक रीति–रिवाज से संपन्न हुआ। समाज कल्याण विभाग की ओर से सभी दुल्हनों को कपड़े, जेवरात, नगद राशि और बर्तन सहित कई सामान दिए गए। जिला अधिकारी नेहा शर्मा, मुख्य विकास अधिकारी अंकिता जैन, विधायक प्रतीक भूषण सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष घनश्याम मिश्रा और सांसद प्रतिनिधि रमाशंकर मिश्रा ने सभी नवविवाहित जोड़ों को उपहार देकर शुभकामनाएं दीं।गोंडा जिले में इस योजना के तहत कई चरणों में हजारों कन्याओं की शादी कराई जानी है। यह कार्यक्रम समाज के गरीब वर्ग की कन्याओं के लिए वरदान साबित हो रहा है।

वही गोंडा सदर भाजपा विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने बताया कि आज यहां पर बहुत अच्छे ढंग से भव्य तरीके से कम सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जहां हिंदू और मुस्लिम दोनों जोड़ों की शादी यहां पर जिला प्रशासन द्वारा कराई गई है। सभी को हमने जीवन में खुशहाली को लेकर के बधाई और शुभकामनाएं दी है।

एक सलाह भी हमने दी है कि पति–पत्नी के बीच जो भी बात हो तीसरा ना जाने और दोनों लोग एक दूसरे से झगड़ा ना करें। सबका साथ सबका विकास के नारे के साथ भाजपा सरकार द्वारा काम किया जा रहा है। सबसे खुशी की बात यह थी कि एक तरफ हिंदू रीति रिवाज से हिंदुओं जोड़ों की शादी हो रही थी तो वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम रीति रिवाज से मुस्लिम समाज की बेटियां निकाह पड़ रही थी। सभी को उपहार दिया गया है लगभग 450 से अधिक जोड़ों की यहां पर आज समाज कल्याण विभाग द्वारा कार्यक्रम आयोजित करके शादी कराई गई है और भी कार्यक्रम इसी तरीके से आने वाले दिनों में कराए जाएंगे।

राप्ती नहर माइनर कटने से 300 बीघा फसलें जलमग्न

संवाददाता–बलरामपुर। बदलपुर व हिसामपुर में राप्ती नहर माइनर कटने से 300 बीघा गेहूं, मसूर व सरसो फसल जलमग्न हुई है। पिछले 24 घंटे से खेतों में पानी भरा है, जिससे फसलें नष्ट होने के कगार पर पहुंच गई हैं। माइनर में कटान शनिवार शाम करीब चार बजे हुई है। पानी का प्रसार बढ़ता ही जा रहा है। फसलें जलमग्न होने से किसानों की चिंता बढ़ गई है। पूंजी डूबने के साथ–साथ उनकी उम्मीदों पर भी पानी फिर गया है।

शनिवार को राप्ती मुख्य नहर में दोपहर बाद पानी छोड़ा गया। पानी का फोर्स बढ़ते ही बदलपुर व हिसामपुर का माइनर लगभग दस–दस मीटर कट गया। तीव्र प्रवाह से पानी क्षेत्र में फैलने लगा। राजेश सिंह, सुखदेव, पिंटू, शिवराम व शफातुल्लाह ने बताया कि कंदैला व बदलपुर में लगभग 150 बीघा फसल जलमग्न हुई है। देखते ही देखते लगभग एक फीट पानी खेतों भर गया। गेहूं, सरसा व मसूर फसल पानी में दफन हो गई। फसलें तबाह होता देख किसानों मे हाय तोबा मच गई। मामले की जानकारी राप्ती नहर परियोजना के अवर अभियंता दिनेश तिवारी को दी गई, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। किसान अपनी तबाह होती फसलों को देखते रहे। किसान रमजान व अनोखी ने बताया कि उन्हें अपने बेटों की शादी करनी थी। गेहूं फसल का बहुत सहारा था, लेकिन अब उनके सामने नई चुनौती है। बैठोले, राम जियावन, साधू प्रसाद, संतराम आदि ने बताया कि गेहूं फसल पकने के कगार पर है। ऐसे में खेतों में पानी भरने से फसल का नष्ट होना तय है।

दिनेश तिवारी, अवर अभियंता राप्ती नहर परियोजना ने कहा कि माइनर कटने की सूचना मिली है। सोमवार तक माइनर को दुरस्त करा दिया जाएगा। किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होने दी जाएगी।

छात्रों ने पेश किए रंगारंग कार्यक्रम, बीईओ ने की बच्चों की हौसला अफजाई

संवाददाता–कुशीनगर। उच्च प्राथमिक विद्यालय चन्दरपुर में वार्षिकोत्सव के साथ कक्षा 8 के छात्रों का विदाई समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रामकोला के बीईओ राजेश कुमार सिंह मौजूद रहे। छात्रों ने देशभक्ति, सामाजिक कुरीतियों और शिक्षा से जुड़े विषयों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में ब्लॉक के आसपास के सरकारी विद्यालयों के प्रतिनिधि और अभिभावक शामिल हुए।

बीईओ राजेश कुमार ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्होंने कक्षा 8 तक की पढ़ाई में खुद को साबित किया है। उन्होंने छात्रों से मेहनत और लगन बनाए रखने की अपील की।

प्रधानाध्यापिका आनंदा देवी ने बताया कि कार्यक्रम की कोरियोग्राफी उमेश कुमार यादव, सतीश चंद्र और स्वतंत्र कुमार पटेल ने की। उन्होंने कहा कि उनके विद्यालय के छात्रों की क्षमता किसी कॉन्वेंट स्कूल से कम नहीं है।

शिक्षक उमेश यादव ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। सरकारी मदद और शिक्षकों की मेहनत से ये बच्चे प्रतियोगी परीक्षाओं से लेकर खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि विदाई ले रहे छात्र भविष्य में भी स्कूल का नाम रोशन करेंगे।

गायत्री मंत्र से होता है आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार

संवाददाता–देवरिया। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गौरी बाजार में आयोजित 108 कुंडीय शक्ति संवर्ग विराट गायत्री महायज्ञ के द्वितीय दिवस पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ा। वैदिक मंत्रोच्चार और यज्ञ आहुतियों के बीच पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

चंद्रशेखर आजाद इंका. देवगांव के परिसर में रविवार सुबह विधिवत वेदमंत्रों के साथ हवन–पूजन की शुरुआत हुई। यज्ञाचार्यों ने श्रद्धालुओं को यज्ञ के महत्व और इसके वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी दी। प्रवचन के दौरान टोली नायक रामचंद्र ने कथा सुनाते हुए कहा कि यज्ञ न केवल आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम है, बल्कि पर्यावरण शुद्धि और मानसिक शांति में भी सहायक होता है। यज्ञाचार्य रामप्रताप ने जीवन में सद्गुणों को अपनाने, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति और समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ाने का संदेश दिया। गायत्री परिवार के श्रीश्याम, अभय ने यज्ञ की महत्ता बताते हुए कहा कि यह आत्मिक शुद्धि और समाज सुधार का महत्वपूर्ण माध्यम है। यज्ञ स्थल पर विभिन्न आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें युग निर्माण योजना, संस्कार अभियान और नशामुक्ति आंदोलन से जुड़ी जानकारी दी गई। प्रज्ञा पुराण कथा में मुख्तार मिश्र, अजर गिरी, पूर्व चेयरमैन विजय कुमार सैनी, जगन्नाथ श्रीवास्तव, राजनरायन पांडेय, श्यामविहारी राय, अनिल पांडेय , अभिराम पांडेय समेत सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे।

धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन दे रहे 5 गिरफ्तार

संवाददाता–महराजगंज। महराजगंज कोतवाली क्षेत्र की कंजड़ बस्ती में धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया है। रविवार को बजरंग दल और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में 5 लोगों को हिरासत में लिया गया है।

बजरंग दल के जिला उपाध्यक्ष अम्बरीष शर्मा को सूचना मिली थी कि कंजड़ बस्ती में कुछ लोग हिंदुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तन के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस सूचना पर वे कोतवाली पुलिस के साथ मौके पर पहुंचे।

पुलिस ने नान्हूं के मकान से गौरव कुमार गौड़, रामकेवल, अमित और सोनू को हिरासत में लिया है। आरोप है कि ये लोग हिंदुओं को ईसाई धर्म अपनाने के लिए विभिन्न सुविधाओं का प्रलोभन दे रहे थे।

मौके से आधा दर्जन से अधिक बाइबल भी बरामद की गई है। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। गौरव कुमार निचलौल का रहने वाला है, जबकि अन्य आरोपी कोतवाली क्षेत्र के विभिन्न इलाकों से हैं। पुलिस के पहुंचने पर मकान में मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया था। फिलहाल पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है।

कोल्ड स्टोरेज से अमोनिया रिसाव होने पर अफरातफरी

संवाददाता–बहराइच। शहर के दरगाह इलाके के रेलवे ओवरब्रिज के नीचे स्थित एक कोल्ड स्टोरेज से शनिवार रात प्लांट से अमोनिया गैस का रिसाव होने लगा। आसपास के लोगों को आंखों में जलन व गंध महसूस होने पर अफरातफरी फैल गई। लोगों की सूचना पर सीएफओ दमकल की टीम के साथ ओवरब्रिज इलाके में पहुंचे। गैस रिसाव की जगह को आउसोलेट कर लिए जाने के बाद समस्या का निदान हुआ।

दरगाह थाने के रेलवे ओवरब्रिज के मुहाने पर ही काफी पुराना कोल्ड स्टोर है। शनिवार रात 11 बजे कोल्ड स्टोर के आस पास के बाशिंदों को गैस रिसाव महसूस होता होने लगा। लोगों को आंखों में जलन व लालिमा पड़ने पर परेशानी होती दिखी। लोग घरों से बाहर निकल आए। इसकी सूचना सीएफओ रामानुज विशाल गौड़ को हुई। वह अपनी टीम के साथ ओवरब्रिज इलाके में पहुंच गैस रिसाव का प्वाइंट ढूंढते हुए कोल्ड स्टोरेज रेज तक पहुंचे। गैस रिसाव की जगह तलाश करते हुए वेंटिलेशन स्टार तक पहुंचे। कोल्ड स्टोरेज के टेक्नीकल स्टाफ की मदद से रिसाव की जगह आउसोलेट कर राहत दिलाई गई। उधर कोल्ड स्टोरेज स्वामी सुनील अग्रवाल ने बताया कि एक गैस पाइप पिंचर हो गया था। उसे तत्काल सही कराया गया। जो गैस पानी में डिस्चार्ज होनी चाहिए थी। उसे हवा में छोड़ने से यह रिसाव के भ्रम की स्थित बनी। वेंटिलेशन प्लांट के तकनीक खराबी के दौरान गैस रिसाव हो सकता है। इसलिए कोल्ड स्टोरेज आबादी के बाहरी हिस्से में बनाए गए हैं। आबादी का घनत्व बढ़ने से यह आबादी के बीच आ गए हैं। प्रशासन को इसकी जांच करनी चाहिए ताकि आबादी के बीच होने वाले कोल्ड स्टोरेज में गैस रिसाव न हो। रामानुज विशाल गौड़, सीएफओ ने कहा कि सूचना पर तत्काल टीम के साथ शनिवार रात दरगाह ओवरब्रिज इलाके पहुंच अमोनिया गैस रिसाव प्वाइंट तलाशते कोल्ड स्टोरेज पहुंचा गया। रिसाव को वहां के कर्मियों, दमकल टीम की मदद से आउसोलेट किया गया। कोल्ड स्टोरेज संचालक को सावधानी बरतने की हिदायत दी गई है।

पिता का आपरेशन कराने गया था परिवार, चोर उड़ा ले गए 12 लाख के आभूषण

संवाददाता–देवरिया। बुजुर्ग पिता के आंख का ऑपरेशन करने पूरे परिवार मुंबई गया था। घर पर रखवाली के लिए एक परिचित व्यक्ति को लगया था। दो दिन से वह व्यक्ति घर पर नहीं सोया। इसी बीच मौका पाकर चोरों ने हाथ साफ कर दिया चोरों ने 12 लाख से अधिक कीमत के सोने के गहने समेत अन्य कीमती सामान उठा ले गए। चोरी की सूचना मिलने पर परिवार के लोग प्लाइट से वापस लौटे और घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने डाग स्क्वायड और फारेंसिक टीम के साथ जांच की। परिजन तहरीर दे रहे हैं। पुलिस कार्यवाही में लगी हुई है।

सुरौली थाना क्षेत्र के उसरा बाजार निवासी दिनेश यादव के तीन पुत्र तीन पुत्र हैं। पहले पुत्र धर्मवीर यादव मुंबई में मर्चेंट नेवी के रहते हैं और उनका परिवार यही गांव पर रहता है। कुछ दिन पूर्व धर्मवीर का परिवार मायके गया हुआ था। उनके दूसरे पुत्र राहुल यादव मुंबई में परिवार सहित रहते हैं। तीसरे पुत्र पंकज यादव की शादी नहीं हुई है और वह गांव पर माता–पिता के साथ रहते हैं। विगत एक सप्ताह पूर्व पंकज अपने माता–पिता के साथ पिता दिनेश यादव का आंख का आपरेशन कराने मुंबई गए हुए थे। वह घर की जिम्मेदारी एक अपने पर पूर्व किराएदार को देकर गए थे। किराएदार रोज घर पर सोता था। दो दिन वह घर पर नहीं सोया। इसी बीच मौका पाकर चोरों ने घर का ताला तोड़ अलमारी व बक्सों में रखा सोने का अंगूठी, मंगलसूत्र, मांगटीका, हार समेत पौजेब, पायल, बिछिया व 30000 नगदी समय 12 लाख से अधिक की चोरी कर लिए। चोरी की जानकारी घर की रखवाली करने वाले व्यक्ति के पहुंचने पर हुई। उसने इसकी सूचना मकान मालिक को दी सूचना। घटना की जानकारी होने पर मकान मालिक फ्लाइट से घर लौटे। घर पर बिखरा हुआ सामान देकर अवाक कर गए। घटना की सूचना उन्होंने पुलिस को दी। मौके पर पुलिस विभाग के अधिकारी फॉरेंसिक टीम व डाग स्क्वायड के साथ बिछिया नकर जांच की। परिजन पुलिस को घटना की तहरीर दे रहे हैं। पुलिस मामले में की कार्रवाई में जुटी हुई है।

हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष को किया नमन, दी श्रद्धांजलि

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। अयोध्या धाम की सिद्धपीठ चंद्रद्वितेश्वर नाथ महादेव मंदिर बाबा कृष्णमोहन दास आश्रम रामघाट के संस्थापक एवं अखिल भारत हिंदू महासभा संत प्रकोष्ठ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमहंत बाबा कृष्णमोहन दास महाराज को संतों, हिंदू महासभाईयों ने नमन किया। अवसर उनकी 16वीं पुण्यतिथि महोत्सव का था। पुण्यतिथि पर रविवार को आश्रम प्रांगण में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में अयोध्या समेत अन्य प्रांतों से आए हुए हिंदू महासभा के पदाधिकारी–कार्यकर्ताओं और संत–महंतों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष साकेतवासी श्रीमहंत बाबा कृष्णमोहन दास महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उनके कृतित्व–व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। चंद्रद्वितेश्वर नाथ महादेव मंदिर व बाबा कृष्णमोहन दास आश्रम के वर्तमान पीठाधिपति वरिष्ठ हिंदू महासभा नेता महंत रवींद्र कुमार दास ने कहा कि उनके गुरुदेव अप्रतिम प्रतिभा के धनी संत थे। जो गौ और संत सेवी रहे। उन्होंने अयोध्या धाम में एक विशाल आश्रम की स्थापना कर उसका कार्यभार संभाला। मठ के वह संस्थापक महंत हुए। जो अब इस दुनिया में नही हैं। उनकी यश–कीर्ति सदैव हम सबके साथ रहेगी। श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य, दिव्य, नव्य मंदिर निर्माण से गुरुदेव का सपना साकार हुआ। वह जहां कहीं पर हैं। उसे अपनी आंखों से देख रहे होंगे। हिंदू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अधिवक्ता मनीष पांडेय ने बताया कि हम सबने हिंदू महासभा संत प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष साकेतवासी महंत बाबा कृष्णमोहन दास महाराज का 16वां पुण्यतिथि महोत्सव मनाया है। पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय अध्यक्ष को श्रद्धापूर्वक याद किया गया। हिंदू महासभा के प्रति उनका अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने हिंदू महासभा को मजबूती प्रदान करने का काम किया। उन्ही की देन है कि आज देश भर में हिंदू महासभा का संगठन बड़ी मजबूती के साथ खड़ा है। आचार्य करुणानिधान गर्ग ने आए हुए संत–महंत और हिंदू महासभाईयों का स्वागत–सत्कार किया। इस अवसर पर तपस्वी छावनी पीठाधीश्वर जगतगुरु परमहंस आचार्य, विश्वविराट विजय राघव मंदिर के श्रीमहंत सिद्धबाबा नरसिंह दास, हिंदू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अधिवक्ता मनीष पांडेय, हिंदू महासभा प्रदेश उपाध्यक्ष महंत रामलोचन शरण उर्फ राजन बाबा, महंत उत्तम दास, हिंदू महासभा जिला महामंत्री चंद्रहास दीक्षित, ब्रजनंदन सिंह, अभय कुमार शर्मा, सोनू सिंह, आचार्य करुणानिधान गर्ग, गणेश शर्मा, युवराज त्रिपाठी, नागेंद्र प्रताप सिंह, गोविंद यादव, अश्विनी पांडेय वैद्य आदि समेत सैंकड़ों लोग मौजूद रहे।

बिना कानूनी प्रक्रिया के गरीबों को विस्थापित करना चाहती है भाजपा –सपा

संवाददाता–देवरिया। सरकारी जमीन से अतिक्रमण हटाने के अभियान को लेकर समाजवादी पार्टी ने भाजपा पर गंभीर आरोप लगाए हैं। रामपुर कारखाना विधानसभा क्षेत्र के सिंगहीडीह में सपा प्रवक्ता मनीष सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार कानूनी प्रक्रिया का पालन किए बिना यह अभियान चला रही है। देवरिया में 15 मार्च 2025 से अतिक्रमण हटाने का अभियान शुरू होने जा रहा है। मनीष सिंह के अनुसार इस अभियान में राजस्व संहिता 2006 की आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया जा रहा है। न तो आर.सी. 19 व आर.सी. 20 की नोटिस दी गई है और न ही धारा 67 की प्रक्रिया अपनाई गई है।

सपा प्रवक्ता ने कहा कि सरकार ने विस्थापित होने वाले लोगों के पुनर्वास की कोई योजना नहीं बनाई है। उन्हें राजस्व संहिता 2006 की धारा 67(ए) के तहत मिलने वाले लाभों की भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। उनका आरोप है कि अखिलेश यादव की पीडीए नीति से डरी भाजपा आम जनता को डराने की कोशिश कर रही है।

मनीष सिंह ने चेतावनी दी कि देवरिया के बाद यह अभियान अन्य जिलों में भी चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अभियान राजनीति से प्रेरित और जनविरोधी है। उनका कहना है कि भाजपा गरीबी मिटाने के बजाय गरीबों को ही मिटाना चाहती है।

चतुरी गांव में हुई ग्राम सुरक्षा समिति की बैठक

संवाददाता–श्रावस्ती। एसएसबी से निरीक्षक योगेश यादव की अध्यक्षता में रविवार को सिरसिया के चतुरी गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय में ग्राम सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सीमा सुरक्षा को लेकर लोगों को जागरूक किया गया। बैठक के दौरान ग्रामीणों से उनकी समस्याएं जानी। इस दौरान निरीक्षक ने कहा कि आस पास हो रही संदिग्ध गतिविधियों व संदिग्ध व्यक्तियों की सूचना नजदीकी चौकियों या फिर टोल फ्री नम्बर 1903 पर जरूर दें। बैठक में उप निरीक्षक सरटो संतोही, उप निरीक्षक बीएस बटोला आदि मौजूद रहे।

पत्रकार हत्या में शामिल लोगों पर हो कड़ी कार्रवाई

संवाददाता–श्रावस्ती। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिला कार्यसमिति की बैठक जिलाध्यक्ष राजकिशोर पाण्डेय की अध्यक्षता में भिनगा के झारखंडी मंदिर में हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में संरक्षक जीपी मिश्र मधुकर मौजूद रहे।

जिसमें सीतापुर के मृत पत्रकार को श्रद्धांजलि दी गयी और हत्या में शामिल लोगों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की गई। संरक्षक मधुकर ने सीतापुर की घटना पर गहरा दुख प्रकट करते हुए प्रदेश सरकार से हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग की। जिलाध्यक्ष राजकिशोर पाण्डेय ने कहा कि पत्रकार की गोलीमार निर्मम हत्या करना बहुत ही जघन्य अपराध है। उन्होंने कहा कि यह मामला पूरे प्रदेश के पत्रकारों के लिए बहुत ही कष्टकारक है। इसके साथ ही जिलाध्यक्ष ने सदस्यता अभियान,सदस्यों को परिचय पत्र उपलब्ध कराने संबंधी बिंदुओं पर गहन चर्चा की। इस मौके पर महामंत्री संजय शुक्ल, उपाध्यक्ष दिनेश पाठक, लेखाकार शेरसिंह यादव, पशुपतिनाथ मिश्र, तरुण कुमार, जगरूप मिश्र आदि मौजूद रहे।

सुहाग रात पर दूल्हा-दुल्हन की मौत, दरवाजा खुला तो दृश्य देख दंग रह गये परिजन

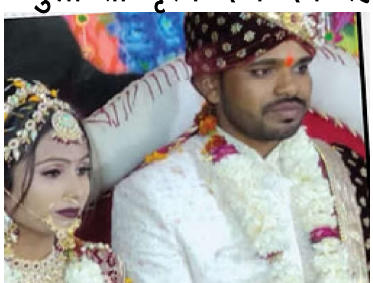

संवाददाता-अयोध्या। अयोध्या में धूमधाम से शादी के बाद सुहागरात मनाने गए दूल्हे और दुल्हन की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। सुबह दोनों के शव कमरे में मिले। दुल्हन का शव बेड पर पड़ा था तो दूल्हा पंखे से लटकता मिला। सुबह सात बजे तक जब दोनों नहीं उठे तो परिवारवाले उन्हें जगाने पहुंचे लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। जब काफी खटखटाने के बाद भी दरवाजा नहीं खुला तो परिवारीजनों ने दरवाजा तोड़ दिया। अंदर दोनों के शव पड़े थे। शवों को देखते ही परिवार में कोहराम मच गया। शाम को रिसेप्शन के जश्न की तैयारी थी लेकिन उसके पहले मातम छा गया। दोनों की मौत की वजह को लेकर फिलहाल कोई कुछ नहीं बता रहा है।

घटना, अयोध्या के कैंट थाना क्षेत्र के सहादतगंज मुरावन टोला की है। मामले की जानकारी पर पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार अयोध्या के सहादतगंज के मुरावन टोला के रहने वाले प्रदीप पुत्र स्वर्गीय भग्गन की 7 मार्च को मोहलिया मौजा डीली सरैया निवासी शिवानी पुत्री मंतूराम के साथ शादी हुई थी। 8 मार्च को वह पत्नी को विदा कर बारात के साथ वापस घर आया था। सुहागरात के लिए दोनों कमरे में गए। इसके बाद जानें किन परिस्थितियों में दोनों की मौत हो गई? शाम घर पर ही प्रीतिभोज (रिसेप्शन) का आयोजन तय था। सुबह कमरे में दोनों के शव मिले। जश्न की तैयारियां मातम में बदल गईं।

सुहागरात के बाद रविवार सुबह नव दंपति के कमरे का दरवाजा खटखटाया गया तो अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। जब काफी कोशिशों के बाद अंदर से किसी ने दरवाजा नहीं खोला तो सुबह करीब 7 बजे परिवारवालों ने दरवाजा तोड़ा दिया। दरवाजा टूटते ही अंदर की स्थिति देख हर कोई कांप गया। कमरे में प्रदीप पंखे से सफेद गमछे के सहारे लटकता दिखा। जबकि उसकी पत्नी शिवानी बिस्तर पर पड़ी थी।

लोगों ने शिवानी को आवाज लगाई लेकिन कोई जवाब ना मिला। शिवानी को लोगों ने हिला-डुला कर देखा। लेकिन कोई हरकत नहीं हुई। यह साफ हो गया कि दुल्हन बनी शिवानी की भी मौत हो चुकी है। वैवाहिक समारोह की खुशियों के बीच हुई इस घटना से परिवार के लोग सदमे में हैं। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा। परिवार के दीपक कुमार का कहना है कि क्या हो गया? कुछ समझ में नहीं आ रहा। इस बीच पुलिस जांच में जुटी है। अयोध्या के सीओ सिटी शैलेंद्र सिंह ने कहा कि जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे उनके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

हाइवे पर अनियंत्रित होकर पलटी डबल डेकर बस, एक की मौत, 32 यात्री घायल

संवाददाता-अयोध्या। जिले के रुदौली थाना के भेलसर ओवर ब्रिज के पास अयोध्या- गोरखपुर हाईवे पर पिलर से टकराने के बाद डबल डेकर बस पलट गई। यह बस गोरखपुर से दिल्ली जा रही थी। बताया जाता है कि चालक को झपकी आने के बाद बस अनियंत्रित होकर पिलर से टकरा गई। इस दौरान बस में सवार गोरखपुर जिले के शाहपुर के रहने वाले अमित शर्मा 28 वर्ष की मौत हो गई है। जबकि बस में सवार 32 लोग घायल हो गए। इनमें 19 लोगों को रुदौली के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के बाद हालत गंभीर होने पर दर्शन नगर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया है।

हादसे के बाद गंभीर रूप से घायल हुए जिन लोगों को दर्शन नगर मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। उनमें दानबहादुर थापा, कीर्ति, सुनेहल राय. राजेश गौड़, सुहानी, सोनी, प्रमोद चौहान ,रजत तिवारी, बबिता, विपिन चंद्र पांडेय,संध्या,मिथिलेश शुक्ला, व्यास चौहान, गजेंद्र अमित सैनी, नेहा, नितेश विश्वकर्मा तथा तेजेश्वर शामिल हैं।

अधिकारियों की अपील पर मुस्लिम समुदाय ने बढ़ाया जुमे की नमाज का समय, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था रहेगी

संवाददाता-अम्बेडकरनगर। जिले की तहसील टांडा सभागार में एसडीएम डॉ. शशिशेखर और सीओ शुभम कुमार की अध्यक्षता में होली के त्योहार को लेकर शांति समिति की बैठक की गई। इस दौरान अधिकारियों की अपील पर मुस्लिम धर्मगुरुओं ने नमाज का समय एक घंटा बढ़ाने पर सहमति दी। एसडीएम ने कहा कि त्योहार को सकुशल संपन्न करने के लिए प्रशासन पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

बिजली, पानी और सफाई की संक्षिप्त व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी। कहीं किसी प्रकार की समस्या आने पर आप सब अफवाह पर ध्यान न देकर तत्काल पुलिस को सूचना दें। सीओ ने मुस्लिम समुदाय के लोगों से अपील की कि 14 मार्च को होली और जुमे की नमाज एक साथ पड़ रही है। इसलिए त्योहार मनाने में किसी प्रकार का व्यवधान न आए, इसके लिए नमाज का समय बढ़ा दिया जाए। साथ ही हर मस्जिद पर दो-दो वॉलंटियर तैनात कर उनका मोबाइल नंबर पुलिस से साझा करें, ताकि कहीं समस्या होने पर तत्काल निदान कराया जा सके।

अधिकारियों की अपील पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि जुमे के दिन नमाज दोपहर 12.40 से डेढ़ बजे की जगह दोपहर दो बजे से ढाई बजे तक होगी। 1.45 बजे के बाद अजान होगी, जिसके बाद नमाज शुरू होगी।

बैठक में नायब तहसीलदार अंबरीश सिंह, प्रभारी निरीक्षक दीपक सिंह रघुवंशी, पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका परिषद टांडा हाजी इफ्तिखार, मदरसा प्रबंधक हाजी अशफाक समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

अचानक टेंट की गोदाम में लगी भीषण आग, लाखों का सामान जलकर राख

संवाददाता-गोरखपुर। शाहपुर इलाके के शिवपुर सहबाजगंज सेक्टर नंबर 3 स्थित कोजी टेंट की गोदाम में रविवार की सुबह 10ः30 बजे भीषण आग लगने मोहल्ले में हड़कंप मच गया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और धू-धू कर गोदाम में रखे त्रिपाल, मैट अन्य सामान जलने लगे।

सूचना पर शाहपुर पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची। 2 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया। हालांकि, किसी ने शार्ट सर्किट बताया तो कुछ गोदाम के उत्तर तरफ कूड़ा जलाने से आग लगने की बात कर रहे हैं। फिलहाल, शाहपुर पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम जांच कर रही हैं। जानकारी के मुताबिक, शाहपुर इलाके के शिवपुर सहबाजगंज सेक्टर नंबर 3 में दो भाइयों नरेंद्र और अभय श्रीवास्तव का लगभग 20 सालों से कोजी टेंट के नाम से गोदाम है। नरेंद्र ने बताया कि लगभग 12 कर्मचारी है। उनका टेंट का सामान कई मैरिज हालों में जाता है। रविवार की सुबह कर्मचारी ने सूचना दी की टिनशेड वाली गोदाम में आग लग गई हैं। उन्होंने बताया कि गोदाम में लगभग 20 लाख रुपये का सामान जलकर राख हो गया है। गोदाम का बीमा भी है। शिवपुर सहबाजगंज सेक्टर नंबर 3 में आग लगने की सूचना पर फायर की ब्रिगेड तीन बड़ी गाड़ी और दो छोटी गाड़ी पहुंची, लेकिन 100 मीटर पहले मोड़ पर एक टेलीफोन की अनुपयोगी पोल होने से फायर ब्रिगेड की बड़ी गाड़ी अंदर नहीं जा पाई।

जिसके बाद दमकल कर्मियों ने फायर ब्रिगेड की दोनों छोटी गाड़ियों को दूसरे रास्ते भेजा और तीनों बड़ी दमकल की गाड़ियों को मोड पर रोक कर किसी तरह पाइप के सहारे काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

पुलिस ने दंगा नियंत्रण उपकरणों का किया अभ्यास, त्योहारों के मद्देनजर तैयारियां पूरी

संवाददाता-संतकबीरनगर। आगामी त्योहारों के दौरान शांति और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए पुलिस ने बड़ी तैयारी की है। पुलिस लाइन परेड ग्राउंड पर 9 मार्च को बलवा मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया।

पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता के निर्देशन और अपर पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार सिंह के मार्गदर्शन में यह अभ्यास संपन्न हुआ। इसमें रिजर्व पुलिस लाइन के उपनिरीक्षक, मुख्य आरक्षी और आरक्षियों ने हिस्सा लिया। पुलिस बल को दंगा नियंत्रण के विभिन्न उपकरणों का प्रशिक्षण दिया गया। इनमें फायर ब्रिगेड से पानी की बौछार, लाठी चार्ज और आंसू गैस के गोलों का इस्तेमाल शामिल था। साथ ही एंटी राइट गन, रबर बुलेट गन, टीयर गैस गन, हैंड ग्रेनेड और मिर्ची बम जैसे उपकरणों का भी अभ्यास कराया गया।

प्रशिक्षण में भीड़ को तितर-बितर करने के विभिन्न तरीकों पर विशेष ध्यान दिया गया। पुलिस टीमों को दंगा नियंत्रण से जुड़े सभी कानूनी प्रावधानों की भी जानकारी दी गई। इस तरह का प्रशिक्षण त्योहारों के दौरान किसी भी आपात स्थिति से निपटने में मददगार साबित होगा।

नीलगाय से टकराकर ऑटो पलटा, 5 लोग घायल

संवाददाता-अम्बेडकरनगर। जलालपुर-बसखारी मार्ग पर नंदापुर गांव के पास एक बड़ा हादसा हुआ। यहां एक ऑटो नीलगाय से टकराकर पलट गया। इस हादसे में ऑटो में सवार पांच लोग घायल हो गए। घटना जलालपुर थाना क्षेत्र में हुई।

ऑटो जलालपुर से सवारियां लेकर जा रहा था। नंदापुर गांव के पास अचानक सामने आई नीलगाय से टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ऑटो पलट गया और बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। सवारियां मुख्य सड़क और पटरियों पर गिर गईं। घायलों में भिटौरा निवासी ऑटो चालक हरिप्रकाश उपाध्याय (25), भिटौरा की सीमा कुमारी (20), चकौरा के राम मिलन (60), हंसवर थाना के बनकटा निवासी दशरथ (40) और बसखारी थाना के नैपुरा निवासी सूफिया (28 शामिल हैं। जलालपुर थाना प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने बताया कि सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगपुर में भर्ती कराया गया है। चालक हरिप्रकाश और सूफिया की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। अन्य घायलों का इलाज जारी है।

सांड़ के हमले से रिटायर्ड पोस्टमैन घायल

संवाददाता-गोरखपुर। गीडा थाना के अमटौरा गांव में बिगड़ैल सांड़ के आतंक से ग्रामवासी परेशान हैं। आए दिन किसी न किसी को निशाना बना रहा है। रविवार की सुबह सांड ने रिटायर पोस्टमैन शिव प्रताप सिंह (66) के ऊपर हमला कर दिया। इसमें वे बुरी तरह से घायल हो गए। परिजन तत्काल उन्हें सीएचसी पिपरौली ले गए,जहां गंभीर हालत देखते हुए डॉक्टर ने जिला अस्पताल रेफर किया। किसी निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। ग्रामीणों का कहना है एक महीने से सांड़ का आतंक है। आए दिन वह किसी न किसी पर हमला करता है और लोग घायल हो रहे हैं। ग्रामीणों ने इस समस्या से निजात दिलाने की मांग की है। वन विभाग दरोगा आशुतोष तिवारी ने बताया कि यह वन विभाग के दायरे में नहीं आता।

बृजभूषण शरण सिंह ने किया दंगल का उद्घाटन, पुरुष-महिला पहलवानों ने दिखाया दम

संवाददाता-अयोध्या। कामाख्या धाम महोत्सव के चौथे दिन रविवार को विशाल दंगल का आयोजन किया गया। कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष और निवर्तमान सांसद बृजभूषण शरण सिंह मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए।

बीजेपी विधायक रामचंद्र यादव के नेतृत्व में श्री सिंह का भव्य स्वागत किया गया। महोत्सव न्यास के अध्यक्ष रविकान्त तिवारी मोनू ने उन्हें माता कामाख्या का स्मृति चिन्ह भेंट किया।

कार्यक्रम से पहले बृजभूषण शरण सिंह और बीजेपी विधायक रामचंद्र यादव ने कामाख्या धाम मंदिर में माथा टेका। इसके बाद कार्यक्रम स्थल पर दीप प्रज्वलित किया गया। मुख्य अतिथि ने विधि-विधान से पूजा-अर्चना की और पहलवानों के हाथ मिलवाकर दंगल का शुभारंभ कराया।

दंगल में पुरुष और महिला पहलवानों ने हिस्सा लिया। पहले राउंड में उतरे दोनों पहलवानों ने बराबरी की टक्कर दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि उन्हें दूसरी बार माता कामाख्या के दर्शन का मौका मिला। उन्होंने बताया कि 2022 में भी वे यहां माता का आशीर्वाद लेने आए थे। उन्होंने कहा कि कुश्ती खेल सदियों से चला आ रहा है। जामवंत हनुमान सुग्रीव का भी प्रिय खेल कुश्ती ही रहा है। भगवान श्री कृष्ण ने भी द्वापर में कुश्ती लड़ी थी।

यह महोत्सव कामाख्या नगर पंचायत में सात दिनों तक चलेगा। महोत्सव न्यास के मुख्य संरक्षक बीजेपी विधायक रामचंद्र यादव की देखरेख में कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष शीतल प्रसाद शुक्ला,भाजपा नेता रविकांत त्रिपाठी,पूर्व ब्लॉक प्रमुख मिल्कीपुर कमलेश यादव, अमानीगंज ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि पवन सिंह, भवानी फेर मिश्रा सहित बड़ी संख्या में कुश्ती देखने आए स्थानीय और अमेठी जनपद के लोग मौजूद रहे।

एक से बढ़कर एक पहलवानों ने कुश्ती के माध्यम से अपना कर्तव्य दिखाए कई प्रदेश के पहलवान अपना जोर आजमाइश किया। महिला पहलवानों की कुश्ती को देखने के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं भी पहुंची थी।

शराब पीकर वाहन चलाने वालों समेत 63 का हुआ चालान

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। यातायात पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक महाजन के निर्देश पर चलाए गए विशेष अभियान में कई लोगों के चालान काटे गए।

यातायात प्रभारी अमरेश कुमार और उनकी टीम ने बांसी कस्बा, सनई चौराहा, साड़ी तिराहा, पावर हाउस तिराहा और पेट्रोल पंप तिराहा पर विशेष जांच अभियान चलाया। टीम ने इन स्थानों पर रिफ्लेक्टर टेप लगाए और पीए सिस्टम से लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया।

पुलिस ने शराब पीकर वाहन चलाने वालों की ब्रेथ एनालाइजर से जांच की। इसके अलावा दोपहिया वाहनों पर तीन सवारी, बिना हेलमेट, चार पहिया वाहनों में सीट बेल्ट न लगाने, गलत दिशा में वाहन चलाने और नाबालिग द्वारा ई-रिक्शा चलाने वालों की भी जांच की गई।

कार्रवाई में कुल 63 वाहनों का चालान किया गया। 80,500 रुपए का शमन शुल्क वसूला गया। साथ ही सड़कों के किनारे खड़े बड़े वाहनों को भी हटवाया गया। जो दुर्घटना और जाम का कारण बन सकते थे। पुलिस ने सभी वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने की हिदायत दी, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके।

15 मार्च को निकलेगी भगवान नरसिंह की भव्य शोभायात्रा, सुबह 8:30 बजे होगी आरती

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। डुमरियागंज में धर्म रक्षा मंच की ओर से राम राम होली का आयोजन किया जाएगा। जिला परिषद मार्केट स्थित भाजपा कार्यालय पर रविवार को इस आयोजन को लेकर बैठक हुई। धर्म रक्षा मंच के संरक्षक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 15 मार्च को सुबह 8:30 बजे बैदौला चौराहे पर लोग एकत्रित होंगे। यहां भगवान नरसिंह जी की आरती की जाएगी। इसके बाद भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभायात्रा का रूट बैदौला चौराहा से शुरू। यह मंदिर चौराहा, रोडवेज, थाना और पुरानी बाजार होते हुए श्री हनुमान मंदिर मोड़ तेलियाना मोहल्ला तक जाएगी। वहां प्रसाद वितरण के साथ शोभायात्रा का समापन होगा।

बैठक में भगवान नरसिंह महाआरती आयोजन समिति का गठन किया गया। समिति के सदस्यों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गईं। कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए सभी को तैयारियों में जुट जाने का आह्वान किया गया। बैठक में लवकुश ओझा, चंद्र प्रकाश चौधरी, धर्मराज वर्मा, मधुसूदन अग्रहरि, दिलीप पाण्डेय, संजय सिंह, संजय सूर्यवंशी, विनोद श्रीवास्तव समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

आगामी 15 मार्च को डुमरियागंज में भव्य राम राम होली खेली जाएगी। होली से पहले तैयारी बैठक में पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने स्थानीय सिंगर अमरमणि दुबे द्वारा होली पर गाया गया एक होली गीत रिलीज किया।

होली पर्व से पूर्व रिलीज गीत खेले सब केसरिया होली योगी जी का राज है... को अमर मणि दुबे ने अपनी मधुर आवाज में गाया है, जो जय गणेश फिल्म्स चौनल पर रिलीज हुआ। इस दौरान पूर्व विधायक द्वारा सिंगर अमरमणि दुबे, लेखक सत्य तिवारी, निर्देशक व म्यूजिक डायरेक्टर दर्शन मिश्रा को अंगवस्त्र प्रदान कर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषितकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पोस्टर में खुशी सिंह और भव्या प्रथम

संवाददाता-गोरखपुर। सरस्वती विद्या मंदिर महिला महाविद्यालय आर्य नगर में चल रहे एनएसएस के सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। छात्राओं ने योग की विभिन्न मुद्राओं और उससे होने वाले लाभ के बारे में जाना। पोस्टर प्रतियोगिता में खुशी सिंह एवं भव्या उपाध्याय संयुक्त रूप से प्रथम, अनु प्रिया राव द्वितीय, रेखा कुशवाहा तृतीय रहीं। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट में दुर्गा जी प्रथम, नम्रता यादव द्वितीय, रिया पाण्डेय एवं पुष्पा संयुक्त तृतीय रहीं। दूसरे सत्र में बेटी बचाओ अभियान एवं दहेज प्रथा पर परिचर्चा का आयोजन हुआ। इस दौरान कार्यक्रम अधिकारी डॉ. पूनम श्रीवास्तव एवं डॉ. गीता मौजूद रहीं।

बोर्ड परीक्षा देने गई छात्रा प्रेमी के साथ फरार,बरामद

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। चिल्हिया थाना क्षेत्र के एक गांव की छात्रा बोर्ड परीक्षा देने घर से छोटी बहन के साथ गई हुई थी। परीक्षा से निकलकर बड़ी बहन प्रेमी के साथ फरार हो गई। मां की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज कर छात्रा को बरामद कर आरोपी को हिरासत में ले लिया है। चिल्हिया थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी इंटर की छात्रा की परीक्षा केन्द्र शिवपति इंटर कॉलेज शोहरतगढ़ में तीन मार्च की सुबह की पाली में परीक्षा देने गई थी। छोटी बहन भी 12वीं कक्षा की परीक्षा दे रही थी। परीक्षा देकर बाहर निकलने के बाद छोटी बहन से कहकर कि कुछ सामान लेने बाजार में जा रही है अभी वापस आएगी। काफी देर तक स्कूल के पास इंतजार करने के बाद बड़ी बहन सविता जब वापस नहीं आई तो उसने घर पर मां व परिवार वालों को बहन के गायब होने की सूचना दी। परिवार के लोग खोजबीन में जुट गए। काफी खोजबीन के बाद भी जब गायब छात्रा का पता नहीं चला तो मां ने सात मार्च को चिल्हिया थाना पुलिस को तहरीर दी। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए गांव के ही लड़के तौलेश्वर पुत्र आकाश के साथ लड़की को बरामद कर लिया। मां की तहरीर के आधार केस दर्ज करते हुए पुलिस आवश्यक कार्रवाई में जुटी हुई है। थानाध्यक्ष दुर्गा प्रसाद ने कहा की लड़की की मां की तहरीर पर केस दर्ज कर लड़की को बरामद कर आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है।

फर्नीचर की दुकान में आग लगने से लाखों का समाना जलकर राख

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। बांसी तहसील में रविवार को एक बड़ी अग्निकांड की घटना सामने आई। बेलोहा सेमरा मार्ग स्थित पचमोहनी मोड पर स्थित फर्नीचर की दुकान में अचानक आग लग गई। अब्दुल कलाम की फर्नीचर दुकान में लगी इस आग से लाखों रुपए का नुकसान बताया जा रहा है। दुकान में रखा सामान जलकर राख हो गया। घटना की सूचना मिलते ही खेसरहा पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया।

राजस्व विभाग के अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने नुकसान का आकलन भी किया। बांसी तहसीलदार ने कहा कि हल्का लेखपाल को घटना के आकलन के लिए भेजा गया है। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट मिलने के बाद पीड़ित को हर संभव सहायता दी जाएगी।

अपहरण का आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। पुलिस ने एक अपहरण के मामले में वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मोहम्मद हसन रजा के रूप में हुई है। वह मिश्रौलिया थाना क्षेत्र के गौरडिह का रहने वाला है। पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक महाजन के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ और क्षेत्राधिकारी बांसी के मार्गदर्शन में जोगिया उदयपुर थाने की टीम ने यह सफलता हासिल की।

थाना प्रभारी मनोज कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में रविवार को सूपा राजा चौराहे से आरोपी को पकड़ा गया। गिरफ्तारी में उप-निरीक्षक गोवर्धन यादव और हेड कॉन्स्टेबल हेमंत कुमार सिंह की अहम भूमिका रही। आरोपी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए उसे न्यायालय में पेश किया गया है।

सूचना

मैं अरुण कुमार गिरोत्रा पुत्र श्री हर प्रकाश गिरोत्रा निवासी राजा बाजार बस्ती एतद्वारा घोषित करता हूं कि मेरा नाम अरुण गिरोत्रा एवं अरुण कुमार गिरोत्रा एक ही व्यक्ति का नाम है । भविष्य मे मुझे अरुण कुमार गिरोत्रा के नाम से जाना जाए।

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-ऑक्शन नोटिस सं०- LJN-PRKG-05-25

मण्डल रेल प्रबन्धक (ना०), पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु आईआरईपीएस के ई-ऑक्शनिग के मध्यम से ई-ऑक्शन आमंत्रित की जाती है- **क्र0 सं0:- 1, लॉट सं:-**PARKING-LJN-GKP-TW-7-24-1 (Parking Two Wheeler), **कार्य का विवरण:-** गोरखपुर स्टेशन के आरक्षण कार्यालय स्थित दो पहिया पार्किंग (साईकिल, मोटर साईकिल, स्कूटर) का ठेका 03 वर्ष हेतु, **क्र0 सं0:- 2, लॉट सं:-** PARKING-LJN-GK-MX-120-25-1 (Parking Mixed), **कार्य का विवरण:-** गोलागोकरननाथ स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया स्थित संयुक्त पार्किंग (साईकिल, मोटर साईकिल, तीन पहिया, चार पहिया, बस, ट्रक, ट्रैक्टर ट्रॉली) का ठेका 03 वर्ष हेतु, **क्र0 सं0:- 3, लॉट सं:-** PARKING-LJN-MLN-MX-119-25-1 (Parking Mixed), **कार्य का विवरण:-** गैलानी स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया स्थित संयुक्त पार्किंग (साईकिल, मोटर साईकिल, तीन पहिया, चार पहिया, बस, ट्रक, ट्रैक्टर ट्रॉली) का ठेका 03 वर्ष हेतु, **क्र0 सं0:- 4, लॉट सं:-** PARKING-LJN-GKC-MX-111-24-2 (Parking Mixed), **कार्य का विवरण:-** गोरखपुर कैण्ट स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया स्थित संयुक्त पार्किंग (साईकिल, मोटर साईकिल, तीन पहिया, चार पहिया, बस, ट्रक, ट्रैक्टर ट्रॉली) का ठेका 03 वर्ष हेतु, • निविदाकार प्रकाशित सूचना के अनुसार ई-ऑक्शन में भाग ले सकते हैं। IREPS पोर्टल पर दिये गये तिथि / समय के अनुसार सभी लॉट की ई-ऑक्शन प्रारम्भ एवं बंद होंगी। • सभी लॉट के लिये ई-ऑक्शन दि०-21-03-2025, 12:00 बजे प्रारंभ होकर 21-03-2025, 13:00 बजे बंद होगी। • इस ऑक्शन के लिये मैनुअल माध्यम से कोई ऑफर स्वीकार नहीं किया जायेगा। यदि मैनुअल माध्यम से कोई ऑफर प्राप्त होता है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा। • अर्नेस्ट मनी की राशि (10%) का भुगतान केवल IREPS पॉर्टल पर ठेकेदार द्वारा लिंक किये गये बैंक खाते से किया जायेगा। मैनुअल विधि जैसे डिमाण्ड ड्राफ्ट, बैंकर्स चैक, एफडीआर, जमा रसीद आदि के माध्यम से भुगतान की अनुमति नहीं होगी। • विज्ञप्ति सूचना एंव निविदा प्रपत्र प्रारूप तथा, नियम व शर्तों की सम्पूर्ण जानकारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** (E-Auction module) पर उपलब्ध है।

सहायक वाणिज्य प्रबन्धक
मुजाधि/वा0-236 **लखनऊ**

ट्रेनों में बीड़ी/सिगरेट न पियें

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1-4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक-दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक-प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या-फैजाबाद कार्यालय-
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या-फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय-
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय-
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com